साधना और सेवा का संगम

वात्सल्य निर्झर

30/-

अक्टूबर 2023
विक्रम संवत् 2080

ब्रम्ह सत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रम्हैव नापरः ।
अनेन वेद्यं सच्छास्त्रमिति वेदान्तडिण्डिमः ॥

ब्रम्ह वास्तविक है और जगत मिथ्या। जीव ही ब्रम्ह है और भिन्न नहीं। इसे सही शास्त्र के रुप में समझा जाना चाहिए यह वेदान्त द्वारा घोषित किया गया है।

राजलक्ष्मी समविद गुरुकुलम् सैनिक स्कूल

वारियाँ, नालागढ़ (हिमाचल प्रदेश)

पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी
के पावन मार्गदर्शन में

भारत सरकार के रक्षा मंत्रालय द्वारा मान्यता प्राप्त एवं
सी.बी.एस.ई. पाठ्यक्रम आधारित

हम बच्चों के अन्दर का विजेता निखारते हैं

स्कूल की विशेषताएँ

- भारत सरकार के रक्षा मंत्रालय द्वारा अनुमोदित सैनिक स्कूल
- सुरम्य प्राकृतिक वातावरण में छात्रों हेतु सुन्दर, सुखद, सुविधापूर्ण एवं सुरक्षित आवासीय व्यवस्था
- स्मार्ट क्लासेस, अत्याधुनिक प्रयोगशालाओं में अध्ययन सहित सैन्य प्रशिक्षण
- निशाने बाजी, बाधारोहण, बेडमिंटन, बास्केटबाल, वालीबाल, टेबल टेनिस, घुड़सवारी एवं मार्शल आर्ट का प्रशिक्षण
- पौष्टिक भोजन हेतु आधुनिक रसोईघर की व्यवस्था
- डॉक्टर एवं नर्स सहित चौबीसों घंटे डिस्पेंसरी सुविधा

प्रवेश संबंधी जानकारी के लिए सम्पर्क करें

ग्राम–वारियाँ, तहसील–नालागढ़, जिला– सोलन (हिमाचल प्रदेश)

+91 9412777152 +91 9999971714 email : admissions@vatsalyagram.org

Website : www.samvidgurukulam.org facebook : samvidgurukulam

यह है रुचि। नवजात वय में आँखें खोली तो स्वयं को पाया साध्वी ऋतम्भरा जी के कुटुम्ब 'वात्सल्य ग्राम' में। दीदी माँ ही इनकी माँ हैं। इंजीनियरिंग की, विवाह हुआ। अभी कनाडा में रहती है। पति 'रजत' संघ के कार्यकर्ता हैं, एक प्यारी सी बेटी है केशवी। उनके घर गया तो तीर्थयात्रा सी अनुभूति हुई। संघ संस्कारों के निज जीवन में प्रगटीकरण का सहज सरल पर अद्वितीय उदाहरण।

धन्य हैं साध्वी ऋतम्भरा जी, उनका संकल्प और उनका प्रकल्प वात्सल्य ग्राम। यदि अब तक आपने नहीं देखा हो तो अवश्य देखिए, जुड़िए और सहयोग कीजिए।

और धन्य हैं संघ के संस्कार....

संघ से जुड़े हैं आप?

नहीं जुड़े हो तो अवश्य जुड़िए...

– चन्द्रकान्त शर्मा

(प्रचारक – हिन्दू स्वयंसेवक संघ, यू.के.)

(श्री चन्द्रकान्त शर्मा की फेसबुक पोस्ट से साभार)

साधना और सेवा का संगम

वात्सल्य निर्झर

वर्ष 22, अंक 9, अक्टूबर 2023

मुख्य संरक्षक
परम पूज्य महामण्डलेश्वर अनन्तश्री विभूषित
युगपुरुष स्वामी परमानन्द गिरि जी महाराज
संरक्षक
परम पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी
प्रधान सम्पादक
संजय गुप्ता
प्रकाशक
परमशक्ति पीठ द्वारा संजय गुप्ता
सम्पादकीय मण्डल
देवेन्द्र शुक्ल एवं स्वास्तिका

प्रधान कार्यालय
वात्सल्य प्रकाशन, परमशक्ति पीठ
लव–102, अग्रसेन आवास,
66, इन्द्रप्रस्थ विस्तार, दिल्ली –110092
दूरभाष : 011 22238751
मोबाईल सम्पर्क : 99588 85858
ई मेल : info@vatsalyagram.org
वेबसाइट : www.vatsalyagram.org
शाखा कार्यालय
वात्सल्य ग्राम
मथुरा–वृन्दावन मार्ग, पोस्ट–वात्सल्य ग्राम
वृन्दावन (उ.प्र.) 281003

प्रकाशक एवं सम्पादक संजय गुप्ता द्वारा
परमशक्ति पीठ के लिए ओमवीर सिंह,
परमानन्द ऑफसेट, 1/2080, रामनगर,
शाहदरा, दिल्ली से मुद्रित एवं परमशक्ति पीठ,
लव–103, 66, इन्द्रप्रस्थ विस्तार, दिल्ली से प्रकाशित

वात्सल्य निर्झर में प्रकाशित लेख एवं रचनाएँ उनके लेखकों की स्वतंत्र अभिव्यक्ति हैं। अतः उनसे सम्बन्धित किसी भी विवाद के लिए लेखक अथवा रचनाकार स्वयं उत्तरदायी हैं।

परमशक्ति पीठ

अनुक्रमणिका

06 अपनी समझ समाप्त करके...
08 कृतज्ञता, आदिगुरु के चरणों में
10 एकात्म मानवदर्शन
12 पूज्या दीदी माँ जी का विदेश प्रवास
16 कर्ताभाव को समाप्त करके...
22 मधुमेह (डायबिटीज)...
29 धर्म संस्कृति
30 युवाओं के लिए रोजगार मार्गदर्शन

अपनी बात...

– देवेन्द्र शुक्ल

सारे भारत में 'एज्यूकेशन हब' कहलाने वाला राजस्थान का कोटा शहर इन दिनों बच्चों के लिए एक डरावनी तस्वीर लेकर उभर रहा है। एक काली तस्वीर, जिस पर वहाँ की कोचिंग्स में पढ़ने जाने वाले बच्चों की आत्महत्याओं के आँकड़े लगातार बढ़ते जा रहे हैं।

कोटा पुलिस के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री चन्द्रशील ठाकुर बताते हैं कि 'इसके लिए जिम्मेदार है छात्र, छात्राओं के पालकों का वो रवैया, जिसके चलते उनके बच्चे स्वयं पर पढ़ाई का इतना दबाव अनुभव करते हैं कि वो एक सीमा के बाद अवसाद में बदलकर आत्महत्या के रूप में सामने आता है। वो कहते हैं कि हमने कई बार ऐसे अवसाद ग्रस्त बच्चों से पेरेंट्स से फोन पर बात करके उन्हें कोटा आकर कुछ दिन अपने बच्चे के साथ रहने को कहा तो बदले में उनका कहना होता है कि ऐसा कुछ भी नहीं है। हमारा बच्चा तो इतना स्मार्ट है कि वो औरों को डिप्रेस कर दे। कुछ का कहना था कि हम अपने बच्चे से मिलने अभी कोटा नहीं आ सकते क्योंकि ट्रेन में रिजर्वेशन नहीं मिल रहा। ए.एस.पी. आगे बताते हैं कि ऐसे ही एक बच्चे के पिता को तो हमें यहाँ तक धमकी देनी पड़ी कि यदि आप उसे समझाने के लिए नहीं आए तो हमें मजबूरन आपके विरुद्ध एफ.आई.आर. दर्ज करनी पड़ेगी। तब कहीं जाकर वो आए।'

कई बार तो कोटा के शीर्ष कोचिंग संस्थानों द्वारा जब कुछ दिनों के बाद छात्रों के पालकों को यह बताया गया कि अभी आपका बच्चा प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के स्तर पर नहीं है और आपको इसे अपने घर पर रखकर ही आगे की कोई तैयारी करवानी चाहिए, तब भी उसके पैरेंट्स उसे ले जाने को तैयार नहीं हुए। ऐसे अधिकांश मामलों में उन्होंने बच्चे का एडमिशन कोटा के ही किसी दूसरे कोचिंग संस्थान में करवा दिया।

कोटा के कलेक्टर ओ.पी.बांकुर का कहना है कि 'अपने बच्चों को कोटा में अच्छी शिक्षा लेने हेतु भेजने वाले माता-पिता की स्वाभाविक अपेक्षा होती है कि ऐसा हो सके परन्तु यदि उनका बच्चा इस उम्मीद पर खरा नहीं उतर पा रहा हो तो उन्हें से स्थिति भी स्वीकारनी चाहिए। ये बात सच है कि उन पालकों में से अधिकांश कड़ा संघर्ष करके बच्चों की फीस देते हैं। कई बार वो ये सोचते हैं कि उनका बच्चा पढ़ तो सकता है परन्तु वो कड़ी मेहनत नहीं कर रहा। छात्रों की कोई बात नहीं सुनी जाती और इसी कारण बच्चे तनाव में आकर आत्महत्या कर लेते हैं।'

प्रशासन के उपरोक्त दोनों ही अधिकारियों के कथन इन बात को पुष्ट करते हैं कि हमारी महत्वाकांक्षाओं की लम्बी डोरी ही बच्चों के गले का फन्दा बन रही है। हमारी अंधी लालसा की भूख भारतीय रुपये से नहीं मिटती, उसे तो अमेरिकी डॉलर चाहिए। हम अपने बच्चे के दिमाग को भारत के विकास से नहीं जोड़ना चाहते, हम तो चाहते हैं कि हमारा बच्चा तो बस कैसे भी एक बार 'एक्सपोर्ट' होकर किसी अमेरिकन कंपनी में पहुँच जाए। हमें क्या लेना-देना भारत के भविष्य से। चलिए, मान लेते हैं कि विदेशी मुद्रा का भी किसी राष्ट्र के विकास में योगदान होता है परन्तु इसके लिए क्या अपने बच्चों पर इतना मानसिक दबाव डाला जाना चाहिए कि वो पंखों पर लटककर या छतों से कूदकर अपनी जान दे दें। धिक्कार है माता-पिता की ऐसी बेशर्म इच्छाओं पर जो बच्चों को 'रेस के घोड़े' की तरह इस्तेमाल करती हैं। आप अपने बच्चों को उनकी रुचि और क्षमता के अनुसार निखरने नहीं देना चाहते। यही उनके गले का फन्दा है। आप अपने रिश्तेदारों के विदेश चले गए बच्चों से उनकी तुलना करते हैं। यही समस्या है।

इस तुलना में आप कभी उन माता-पिता का अकेलापन महसूस नहीं करते, जिनके विदेश गए बच्चे अब कभी लौटकर भारत नहीं आएंगे। वो वहाँ शादी तक कर लेते हैं और यहाँ माता-पिता आँसू बहाते रह जाते हैं। बेटा-बहू और बेटी-दामाद विदेश में अपनी जिंदगी जी रहे हैं और यहाँ भारत में अकेली रहने वाली माँ अपने उस डिप्रेशन का इलाज दवाओं में ढूँढ रही है, जो कभी खत्म नहीं होगा। खुशियाँ डॉलरों से मिलती हैं, जीवन के इस पड़ाव पर आकर ये भ्रम शीशे की तरह चकनाचूर हो जाता है। आप भी यदि अपने बच्चे को 'कोटा ब्रांड' किसी कोचिंग में इन्हीं सब के लिए भेजते हुए उस पर अनावश्यक मानसिक दबाव बना रहे हैं तो समझ लीजिए कि हमारी महत्वाकांक्षाएँ ही एक दिन अंतहीन दुःखों का कारण बनती हैं। बच्चों को अपनी प्रतिभा के साथ आगे बढ़ने दीजिए क्योंकि आपकी जिद से ज्यादा जरूरी है उनका जिन्दा रहना।

अपनी समझ समाप्त करके अकेले हो जाओ...

- युगपुरुष स्वामी परमानन्द गिरि जी महाराज

युक्ति से, तरीके से या चोट करके जैसे धान का छिलका निकालकर चावल को अलग कर देते हैं, ऐसे ही विचार करके, विवेक करके अपनी आत्मा को शरीर कोषादि से अलग स्पष्ट समझना चाहिए।

'सदा सर्वगतो अप्यात्मा न सर्वत्र अवभासते' - आत्मा सदा सर्वत्र होने पर भी सर्वत्र मालूम नहीं पड़ती। अर्थात् आत्मा सदा है और सर्वत्र है लेकिन सभी जगह मालूम नहीं पड़ती। अब आपको यह नहीं जाँचने वाली बात लगती है। अब यह तुमको ही नहीं, उन ज्ञानियों को भी यह पता है कि ऐसा लगता है क्योंकि तुम्हारे अनुभव यदि उनको न हुए होते, तो तुम्हें समझा ही नहीं सकते थे। यदि हम स्वप्नों की बात समझाते हैं, तो हमें भी हुए होंगे और कभी-कभी अब भी होते रहते होंगे। मान-अपमान, लाभ-हानि मुझे यदि कभी पता नहीं चलते तो आपको कैसे समझाता?

आत्मा सर्वगत होने पर भी सर्वत्र विद्यमान अनुभव नहीं होती 'बुद्धावेवावभासेत्' वहीं अनुभव में आती है, जहाँ बुद्धि है। अर्थात् आत्मा वहीं मालूम पड़ती है, जहाँ बुद्धि है, जिनमें बुद्धि है या जब बुद्धि है। जब गहरी नींद होती है तो मालूम नहीं पड़ती। जब जगते हैं फिर मालूम पड़ती है तो "अवभासेत्" बुद्धि में ही मालूम पड़ती है कि है जैसे। स्वच्छेषु प्रतिबिम्बवत्, निर्मल जल या दर्पण में ही सूर्य का प्रतिबिम्ब दिखाई देता है। यद्यपि यह सूर्य जहाँ दर्पण नहीं है वहाँ भी आपको दिखाई देता है, इसलिए समझने में कोई दिक्कत नहीं होती है। यदि मात्र सूर्य और दर्पण (प्रतिबिम्ब) ही होते और उनको देखने वाला कोई तीसरा दृष्टा न होता तो क्या सूर्य को अपना प्रतिबिम्ब भासित होता। पर यहाँ तो आप ही सूर्य (चैतन्य) हो। यही अपने को वहाँ देखता है, जहाँ बुद्धिरूपी शीशा है। तीसरा कोई और है ही नहीं। आप अपने को कहाँ अनुभव करते हो? तुम सब जगह हो, पर मालूम नहीं पड़ते। जब तक बुद्धि है तब तक मालूम पड़ता है बल्कि जैसी बुद्धि है, वैसा ही मालूम पड़ता है। जैसे शुद्ध जल या स्वच्छ दर्पण में सूर्य का प्रतिबिम्ब मालूम पड़ता है, ऐसे ही सदा सर्वत्र रहने वाली आत्मा की उपस्थिति वहाँ मालूम पड़ती है, जहाँ बुद्धि है। शरीर है और बुद्धि नहीं है, तो नहीं मालूम पड़ेगा, इसलिए मनुष्य शरीर में, बुद्धि में पहले 'मैं' पड़ती है। अब जानना क्या है कि मैं सदा हूँ? सर्वत्र हूँ।

ऐसा क्यों समझ में नहीं आता? क्योंकि एक बार जब हम कोई बात समझ लेते हैं तो वही बात हमारे दिमाग में घूमती रहती है। हम अपनी व्यापकता को सोच नहीं पाते बल्कि समझाने पर भी समझ में नहीं आता कि हम व्यापक हैं क्योंकि समझ तो वही है, जो बुद्धि पहले समझे बैठी है। उसे नई बात समझ में नहीं आती। इसी का नाम 'अध्यास' है।

बुद्धि के सोचने की एक विशिष्ट निर्धारित प्रक्रिया है। इन्द्रियों और देह आदि के माध्यम से जो अनुभव एकत्रित किये हैं, बुद्धि उन्हीं को दोहराती रहती है। एक बार इनके बिना (बुद्धि में जो अनुभव जमे हुए हैं, उनको मिटा दो) बुद्धि तो रहे पर 'मैं देह, मन, इन्द्रियों से रहित हूँ' ऐसा सोचना शुरू करो। जब इनके बिना बुद्धि होगी तो यह सोचने को मजबूर होगी कि धीरे-धीरे सभी अनुभव चले गए तो मैं क्या हूँ? यदि ये देहादि तुमसे छीन लिए जाएँ तो कुछ दिनों तक तुम्हारी सोच वही रहेगी, वह जल्दी नहीं बदलेगी पर धीरे-धीरे पुराने अध्यास ज्यों-ज्यों खोएंगे, देह होने का ख्याल ज्यों-ज्यों दिमाग से जाएगा त्यों-त्यों अपने रहने का, सर्वत्र होने का विचार उदय होगा और सहज लगेगा। सीमित होने का ख्याल चला गया और असीम सोचने की जरूरत ही नहीं। लहर हूँ यह ख्याल छूट गया, घड़ा हूँ यह ख्याल चला गया, बेहोशी आई नहीं, तो मिट्टी

हो, जल ही हो। इसमें कोई संदेह है क्या? पर अभी तुम घड़ा हो या बेहोश हो। तुम कुम्हार के बनाए हुए हो या तुम सपनों की सोच के घड़े हो या सोये हुए हो। सोये हो तो भी मिट्टी नहीं। स्वप्न घड़े का है तो भी मिट्टी नहीं और यदि कुम्हार वाला घड़ा है तो भी मिट्टी नहीं। यदि तुम देह हो तब भी आत्मा नहीं, स्वप्न में देह हो तब भी आत्मा नहीं। सोये हो तब भी आत्मा नहीं। आत्मा होना तुम्हारे अनुभव आया ही नहीं इसलिए एक बार अनुभव करना है कि तुम चैतन्य स्वरूप हो। एकान्त में मन को समाहित करके चिन्तन करोगे तो तुम को भीतर एक चेतनता का अनुभव होने लगेगा। व्यापक न सही सीमित वाली चेतना के लिए अभी ध्यान कराएंगे।

सबसे प्रबल हमारी नेत्रेन्द्रिय है। आप जब ख्याल करोगे तो देखे हुए पहाड़, नगर, गाँव, ध्यान में आते हैं। यदि गाना सुना हो तो सुनाने वाला व्यक्ति या किसी से प्यार किया हो तो देखा हुआ व्यक्ति ख्याल में आता है। हमारी आँखों द्वारा देखा हुआ जगत ही हमारे मन में बसा हुआ है। हमारी सारी स्मृतियाँ रूप से भरी हैं। आपकी लड़ाई हुई रूप से या अरूप से? आपका प्यार हुआ रूप से या अरूप से? हमारी सारी अनुभूतियाँ नेत्र से जुड़ी हुई हैं, इसलिए उपनिषद् कहता है 'आवृत्त चक्षु'- अभी आप ध्यान करेंगे, कोई भी चीज ध्यान में आए तो समझो कि पुरानी देखी हुई, सुनी हुई अनुभूतियाँ हैं, स्मृतियाँ हैं। कभी-कभी स्मृति न हो तो प्रत्यक्ष भी होता है। प्रत्यक्ष उसे कहते हैं जब स्मृति साकार हो जाती है। यदि प्रवचन याद आए तो 'स्मृति' है और जब शब्द या मन्त्र स्पष्ट सुनाई देने लगे तो यह अनुभूति 'प्रत्यक्ष' हो गई, साकार हो गई। ध्यान में दोनों बातें होती हैं स्मृति भी और प्रत्यक्ष भी। ध्यान करते-करते गुरु या भगवान साकार दिखने लगें तो ये आपके लिए चमत्कार होगा। चमत्कार माने आश्चर्य ।

ध्यान में स्मृति आई, घर की या सत्संग की। प्रत्यक्ष दर्शन हुआ गुरु, भगवान या देवी-देवता का। तुम होश में रहो, जागे रहो अन्दर । थोड़ी देर में अनुभव होगा कि अभी हम बाहर की इन्द्रियों से देखा करते थे, अब हम अपनी बुद्धि में देख लेते हैं, सुन लेते हैं, जान लेते हैं। फिर धीरे-धीरे बुद्धि रह जाए, न इन्द्रियों के बाहर के विषय रह जाएं, न भीतर के विषय। केवल मैं तो हूँ। दिखने वाली रोशनी नहीं, न अन्धेरा रहा, न कोई रहा और शून्य में भी शून्य दिखता है, निराकार भी मालूम पड़ता है, तो मैं कौन हूँ? उस मैं को ढूँढ लेना है। उस मैं का कोई आकार नहीं। आप कहोगे मिलता ही नहीं? रोशनी को कौन जान रहा है? शब्द का, क्रिया का बोध किसे हो रहा है? जब कोई और नहीं तो अकेले कौन बचा? उस एकान्त देश में 'मैं' हूँ तो वहाँ मैं क्या हूँ? धीरे-धीरे ज्ञानस्वरूप आनन्दघन आत्मा के कुछ न बचेगा। तब देखोगे कि जैसे कोई योद्धा सारी सेनाओं को मारकर विजय कर लेता है ऐसे ही सम्पूर्ण जगत को तुमने जीत लिया, सम्पूर्ण अनुभूतियाँ खत्म कर दीं और सब दुनिया को मारकर :

सब प्रपंच निज उदर मेलि। सोवे निद्रा तज योगी।।

निद्रा रहित, सोये नहीं हो, जागे हो। सारी दुनियाँ से रहित 'निद्रा तजि' बिना नींद के दुनिया गायब करके आराम कर रहे हो। बिना नींद के सोये हो। सारी दुनिया को समझ में खत्म करके, अभी आप दुनिया को समझ से नहीं हटा पा रहे। सारी दुनिया को अपनी समझ से हटाकर अकेले हो जाना है। जहाँ मैं हूँ और कोई नहीं। मैं हूँ आकाश भी नहीं।जब सब स्मृतियों का लय हो जाएगा तो अकेला खालीपन रह जाएगा। उस समय ध्यान देना कि खालीपन का अनुभव आत्मा के बिना किसको हो रहा है? तुम अपनी सारी समझ का त्याग कर दो और जो उपनिषद् के महावाक्य कहते हैं, वह सुनो।

बुद्धि के सोचने की एक विशिष्ट निर्धारित प्रक्रिया है। इन्द्रियों और देह आदि के माध्यम से जो अनुभव एकत्रित किये हैं, बुद्धि उन्हीं को दोहराती रहती है। एक बार इनके बिना (बुद्धि में जो अनुभव जमे हुए हैं, उनको मिटा दो) बुद्धि तो रहे पर 'मैं देह, मन, इन्द्रियों से रहित हूँ' ऐसा सोचना शुरू करो। जब इनके बिना बुद्धि होगी तो यह सोचने को मजबूर होगी कि धीरे-धीरे सभी अनुभव चले गए तो मैं क्या हूँ? यदि ये देहादि तुमसे छीन लिए जाएँ तो कुछ दिनों तक तुम्हारी सोच वही रहेगी, वह जल्दी नहीं बदलेगी पर धीरे-धीरे पुराने अध्यास ज्यों-ज्यों खोएंगे, देह होने का ख्याल ज्यों-ज्यों दिमाग से जाएगा त्यों-त्यों अपने रहने का, सर्वत्र होने का विचार उदय होगा और सहज लगेगा।

(पुस्तक 'आत्मबोध' से साभार)

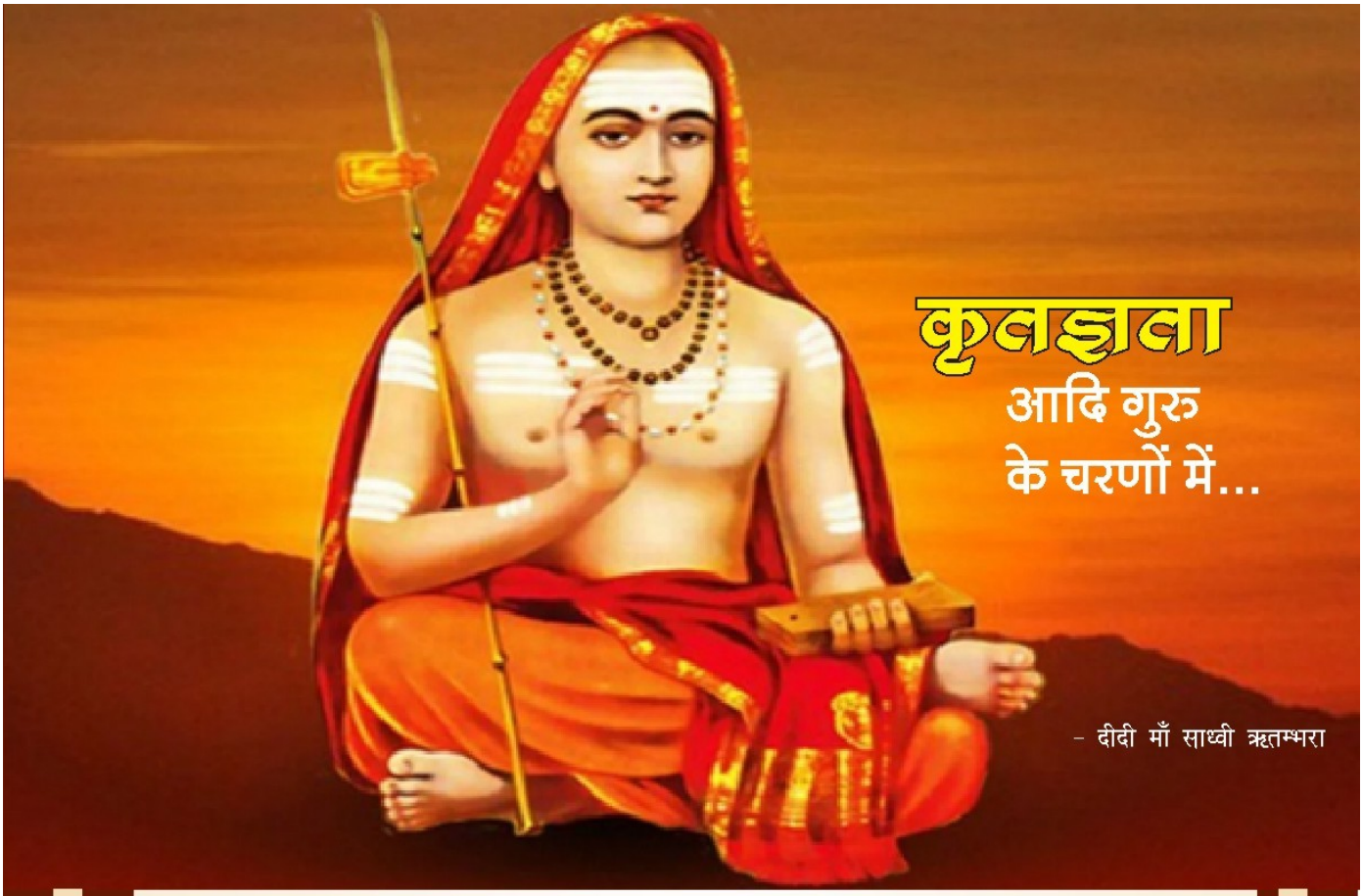

कृतज्ञता
आदि गुरु के चरणों में...

– दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा

आदि जगदगुरु शंकराचार्य जी महाराज की परम्परा को बहुत सारे ऋषियों ने अपने तप से सींचा है, अपनी साधना से श्रृंगारित किया, अपनी निष्ठा से जीवित किया है और अपने संपूर्ण समर्पण से इसको उज्जवल, आलोकित करके सारी जगति का उद्धार करने के लिए समर्पित किया है। प्रत्येक पिता चाहता है कि उसका पुत्र उसकी परम्परा का संवाहक बने। हम मातृ-पितृ ऋण चुकाते हैं, मातृभूमि का ऋण झुकाते हैं लेकिन एक ऋषि ऋण है जिसको चुकाने के लिए, जिसके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का अवसर हमें इस जीवन में मिलता है।

मैं विचार कर रही थी कि किस तरह गुरुओं को ऐसे शिष्यों की तलाश होती है जो त्याग की, वैराग्य की, ईश्वर भक्ति की, निष्ठा की और सृष्टि के कल्याण की उस भावना को जन-जन तक पहुँचाएँ, जिस भावना में गुरु स्वयं जिये, जिस भावना को उन्होंने अपना सर्वस्व माना। बहुत आनंद होता है जब ऐसा कोई व्यक्ति दिखाई दे, जिसे देखते ही ऐसा लगे कि यही वो व्यक्ति है जो त्याग का अनुसरण करेगा, चित्त में वैराग्य को धारण करेगा, सारे जगत को जगत का सच बताएगा लेकिन उसको बताने से पहले उस सच को स्वयं अनुभव करेगा।

मेरा वो अनुभूत विषय कैसे बने? जब हम साधना में तह तक जाते हैं, उसकी अतल गहराईयों में प्रवेश करते हैं, तब हमारे जीवन में आचरण अपने उत्तुंग शिखर पर पहुँचता है। जिनकी जड़ें नहीं होती, उनके बाहर के विस्तार उनको सुखी नहीं करते। जिनकी जड़ें गहरी होती हैं वो वृक्ष आँधियों और झंझावातों में भी सीना तानकर खड़े रहते हैं। नहीं तो, सामान्य व्यक्ति थोड़ी सी प्रतिकूल परिस्थिति में बिखरता हुआ दिखाई देता है परन्तु जिन पर गुरु की कृपा होती है वे प्रतिकूलताओं में भी नहीं बिखरते। वो संसार की चोटें खाकर और भी निखर जाते हैं, और भी खूबसूरत हो जाते हैं। 'पत्थर जो चोट खाकर टूट गया कंकर बन गया, पत्थर जो चोट को सह गया शंकर बन गया।' वह भीतर का शिवत्व जब जाग्रत हो, मन के तल पर, शरीर के तल पर या बुद्धि के तल पर नहीं अपितु आत्म तल पर तब जीवन है, बाकी तो मरने की तैयारी है। जिस दिन जन्म हुआ, उसी दिन से मौत चारों तरफ से घेरे है शरीर को। पहले देहातों में बहुत कम आयु में ही लोगों के विवाह हो जाया करते थे। बाद में 'गौना' होता था। तब लोग गीत गाते थे 'बुरो लगो चाहे नौ-नौ जू, एक दिन गौनो होनो जू' अच्छा लगे चाहे बुरा लगे पर 'गौना' तो एक दिन होगा ही।

शरीर तो एक दिन छोड़ना ही है और अगर प्रसन्नता से छूटेगा तो शरीर को धारण करना धन्य हो

जाएगा। लेकिन प्रसन्नता से तो तब छूटेगा ना, जब शरीर को धारण करने का उद्देश्य पूरा हो जाए। शरीर को धारण करने का उद्देश्य क्या है, यानि की चोले में आने का उद्देश्य क्या है? मानवी चोले में आने का उद्देश्य मात्र धन कमाना तो हो नहीं सकता। मात्र संतानों को जन्म देना तो हो नहीं सकता, मात्र बड़े-बड़े बंगले खड़े करना तो हो नहीं सकता। उस परम उद्देश्य पर दृष्टि ले जाता है गुरु। गुरु आपके हृदय में परम तत्व के प्रति आग्रह और उसके महत्व को समझने की बुद्धि स्थापित करते हैं। वो गुरु जो आपको बाहरी चीजों में उलझाते हैं, वो मात्र दुकानें हैं। उससे किसी की आजीविका चलती है लेकिन तत्व चिंतन में जो लगाता है वो है सच्चा सद्गुरु।

हम लोग बहुत श्रद्धा भक्ति से भगवान शंकराचार्य जी के उदात्त भाव का चिंतन करते हुए उनकी चरण पादुका का पूजन किया करते हैं। वे ऐसे महापुरुष हैं जिनकी परम्परा के हम सब संवाहक हैं और जिन्होंने बताया कि जो दिखाई देता है वह दृश्य है और जो दृश्य बना है वह एक दिन अदृश्य हो जाएगा। शरीर में अवस्थाएँ आएंगी और चली जाएंगी। कभी बचपने की झंकार है और कभी जवानी का तूफान है और कभी वार्दक्य की उदासी है। तुम इस शरीर में हो, ये तुममें नहीं है। तुम हमेशा उतने ही नये हो जितना अपने बचपन के शरीर में रहते हुए थे और तुम तब भी उतने ही नये रहोगे, जब शरीर जर्जर होकर छूट जाएगा। क्योंकि तुम शरीर नहीं, केवल शरीरी हो, इस बात का बोध करवाया आदिगुरु शंकराचार्य जी महाराज ने। जो दिखाई देता है ये सब दृश्यमान जगत है। अनुकूलताएँ और प्रतिकूलताएँ कभी टिकती नहीं हैं।

चढ़ता है तूफान, तो कभी उतरता है
मानव तू परिवर्तन से काहे को डरता है

ये जो दिखाई देता है, सब परिवर्तित हो जाएगा, पर जो दिखाई देने वाले को देखने वाला है और उसको भी जो देखता है, वो अपरिवर्तनीय है, वो अविनाशी है, वो अजन्मा है, वो जन्म-मृत्यु से परे है। ऐसा डिमडिम घोष किया उन्होंने। इसलिए अपने आत्मा में, अपने स्वरूप में विराजने वाला भीरू नहीं होता, डरपोक नहीं होता।

अपने स्वरूप का बोध करवाया शंकराचार्य जी महाराज ने। जो दृश्यमान है वो मिटेगा। जवानी परमानेंट है क्या? मैंने सुना है कि साधु अपनी उम्र ज्यादा बताते हैं और स्त्रियाँ अपनी उम्र कम बताती हैं। कदाचित्, चाह तो हर किसी की होती है कि जो हाथ में है, वह टिका रहे। ये बात अलग है कि वह टिका रह नहीं पाता। प्रातः के सूर्य को उदय होते हुए देखा, देखते ही देखते वह मध्यान्ह में परिवर्तित हो गया, अपरान्ह प्रारंभ हुआ फिर सांझ आ गई। सूर्यास्त के बाद रात आ गई लेकिन क्या रात हमेशा रही? नहीं। पुनः प्रभात आ गई। बस, यही परिवर्तन जगत का सच है।

लेकिन हमारी तकलीफ क्या है? हम परिवर्तन नहीं चाहते। चालीस साल पहले पति जैसे मेरा पल्लू पकड़ के आगे-पीछे घूमता था वैसे ही अभी भी मेरी परिक्रमा करे, ये है हमारे हृदय की वासना। जिसके कारण हम परेशान हैं। तुम्हारा बच्चा बचपन में तुम्हारा पल्लू पकड़कर घूमता है लेकिन वही जवान होकर विवाह के बाद पत्नी को अपने निकट ज्यादा पाता है। ये सच है और इस सच को स्वीकार करने वाले कभी दुःखी नहीं होते।

हम आखिर चाहते क्या हैं? जिंदगी का तथाकथित सुनहरा समय हमेशा नहीं रहता। जीवन के प्रत्येक संबंध एक समय के बाद हल्के पड़ जाते हैं। केवल एक ही रिश्ता है, सद्गुरु और शिष्य का, जिसका रंग धीरे-धीरे और गहरा होता चला जाता है। क्यों? क्योंकि सद्गुरु बाहरी कारणों से आपके जीवन में नहीं हैं और आप भी उनका आश्रम हथियाने के लिए उनके पास नहीं हैं। उनका आत्मज्ञान पाने के लिए, उनकी समझ को, उनके विवेक को अर्जित करने के लिए आप उनके पास हो। इसलिए बिना कारण जो प्यार होता है वो स्थाई होता है। इसलिए जो 'सोलह सोमवार' के व्रत करते हुए भगवान शिवशंकर को रिझाते हैं वो फिर व्रत पूर्ण होने के बाद महीनों शिवालय में झाँकते तक नहीं हैं। ये पूजा नहीं, वणिज-व्यापार है। अपने प्रियतम् को प्रसन्न करना प्यार है। उनसे प्रसन्नता पाने के प्रयत्न करना, ये संसार है। इस बात को गाँठ बाँध लो।

मैंने आपसे निवेदन किया कि प्रत्येक पिता चाहता है कि उसका पुत्र उसकी परंपरा का संवाहक बनें। आपको भी अपने ऋषियों की परंपरा का संवाहक बनना है। क्या चाहते हैं सद्गुरु और हम कैसे मुक्त होंगे ऋषि ऋण से? जब हम उनकी वाणी को जन-जन के हृदय में स्थापित करेंगे और स्वयं उसको अपने जीवन में धारण करेंगे। शंकराचार्य जी महाराज की सनातन परंपरा को, उसके आदर्शों को अपने जीवन में उतारते हुए उसे अपनी संतानों के हृदयों में स्थापित करना ही हमें ऋषि ऋण से मुक्त करेगा।

एकात्म मानवदर्शन

-भानुप्रताप शुक्ल

(भाग 2)

विश्व मानवता के सामने आज यह प्रमाण प्रत्यक्ष होने लगा है कि आत्मा की सर्वव्यापी अवधारणा से रहित विकास की प्रतिस्पर्धात्मक युद्धक मानसिकता का प्रतिफल आतंक, आतंक और केवल आतंक ही होता है। इस वातावरण में वास्तविक विकास नहीं, मौत के भयावह दृश्य होते हैं। भारत की राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और शैक्षिक व्यवस्था पश्चिमी विचारों के मार्ग से आगे बढ़ती रहेगी, अमेरिका के पदचिन्हों पर चलती रहेगी तो किसी और परिणति की प्राप्ति नहीं होगी। इसे आर्थिक आतंकवाद का भयावह रूप देखना ही होगा। इसके भी 'विश्व व्यापार केन्द्र' की गगनचुम्बी इमारतें धराशायी होगी। इसकी सुरक्षा के 'पेंटागन टॉवर' भी ध्वस्त होंगे। आर्थिक और सामरिक साधनों से विश्व पर एकाधिकार करने के अनात्मिक प्रयासों से इस प्रतिफल के अतिरिक्त और कुछ हाथ आने वाला नहीं है।

इस प्रवृत्ति की प्रतिक्रिया में उत्पन्न विरोधी शक्तियों में टकराव होगा ही, क्योंकि इस वैचारिकता में कुटिल विभेद की दुर्बुद्धि है, परपीड़ा का लक्ष्य है, शोषण और भक्षण का उद्यम है। इसमें सामंजस्य नहीं है, परम्परालम्बन की स्वीकृति नहीं है, परस्परपूरकता नहीं है, सबके अस्तित्व की सहिष्णुता नहीं है। यह विचार तब उत्पन्न होते हैं, जब सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को एक ही काया के रूप में अनुभव किया जाता है। भारतभूमि का यह सौभाग्य है कि इसके चिन्तन को आप्त ऋषि वचनों का आधार प्राप्त है। इसकी एक निरन्तर और अटूट परम्परा है। इस परम्परा का प्रवाह कभी अवरूद्ध नहीं हुआ। प्रत्येक युग में इसकी अद्यतन व्याख्या होती रही और इसके व्यावहारिक स्वरूप का निर्णय करके इसकी स्थापना की जाती रही। इसके कारण ही हमारे राष्ट्र को चिरयौवन और सनातन अस्मिता प्राप्त हुई है। हमारे राष्ट्र मनीषियों ने इस कार्य की आवश्यकता स्वतंत्रता को भारत में भी अनुभव किया था। जिस समय हमारा स्वतंत्र देश अपने विकास की अवधारणाओं की वैचारिकी तय कर रहा था, विभिन्न विचारों का मंथन चल रहा था, वैश्विक स्तर पर उपजे बौद्धिक इतिहास के प्रवाहों के साथ खुला विमर्श हो रहा था, राज्य व्यवस्था के पूर्व और पुराने ढाँचे विकृत हो चुके थे, जनतंत्र का नया स्वरूप विकल्प बनकर सामने खड़ा था, एक और परम्परा के अनुभव और धरती की नमी से जुड़कर विचार देने की आवश्यकता का अनुभव किया जा रहा था तो दूसरी ओर पश्चिमी विचारों के अंधानुकरण का शक्तिशाली प्रभाव था, जिसका संचालन सत्तारूढ़ कांग्रेसी नेतृत्व कर रहा था। इस अंधानुकरण की प्रवृत्ति पर कम्युनिस्ट वैचारिकता का दबाव भी सक्रिय भूमिका में था, अर्थात् डॉ. राममनोहर लोहिया की देशज समाजवादी विचारधारा, सोवियत रूस का कम्युनिज्म और पश्चिमी पूँजीवाद के परस्पर वैचारिक द्वन्द संसद से सड़क तक गूँज रहे थे।

महात्मा गाँधी के सिद्ध सनातन विचारों का व्याख्यान स्वयं उनके उत्तराधिकारियों द्वारा नकारा जा चुका था। डॉ. लोहिया और आचार्य नरेन्द्र देव द्वारा सम्पोषित देशज समाजवादी विचारों से कम्युनिस्ट विचारों के द्वन्द्व में प्रतिक्रिया के तत्व अधिक थे। केवल राजनीतिक लोकोन्मुखता के कारण वहाँ आध्यात्मिक चिन्तन के स्वतः स्फूर्त विचारों के लिए अवकाश नहीं था। इसी प्रकार महात्मा गांधी के विचार शास्त्र सम्मत होते हुए भी व्यापक लोकोन्मुखता और पर्याप्त युगीन व्याख्या के कारण ठोस प्रस्थान बिन्दुओं की ऐसी शब्दावलियों से रहित थे कि समग्रता में उस चिन्तन को अध्ययन का विषय बनाया जा सके। इन वैचारिक प्रवाहों को एक परिशुद्ध सारणी में विकसित करना आवश्यक था। यह कार्य किया पं.दीनदयाल उपाध्याय ने, जिसे हम 'एकात्म मानवदर्शन' के नाम से जानते हैं। इस विचार के अवतरण में आधुनिक से मूलभूत विश्व की व्यवस्था संबंधी सभी बौद्धिक उत्पाद, भारत का आर्य चिन्तन और व्यवहार जगत की प्रयोगशाला पं. दीनदयाल के सामने थी। इसकी प्राणधारा श्री

माधवराव सदाशिव गोलवलकर 'श्री गुरुजी' की उच्च आध्यात्मिक साधना से जुड़कर प्रेरित और संचालित हो रही थी। अभिप्राय यह है कि इस वैचारिकता में युगीन और शाश्वत दोनों ही भूमिकाएँ समग्र रूप में मूर्तवान हो रही थीं।

एकात्म मानवदर्शन एक प्रत्यक्ष वर्हियोग है, जिसका लोक में प्रत्यक्ष और जीवन में अनुपालन हो सकता है। यह एक समग्र व्यवस्था सिद्धान्त है जिससे व्यक्ति, समाज और राष्ट्रजीवन अपना कायाकल्प करते हुए आगे बढ़ सकता है। इसकी वैश्विक भूमिका विश्व मानवता को आत्मवत् भावभय जीवन पद्धति और विकास का सर्वोत्तम मार्ग दे सकती है। पंडितजी कहा करते थे कि 'मानव जीवन के उद्देश्य और जीवन में सम्पत्ति के स्थान संबंधी हमारी परिकल्पनाओं को निश्चित किये बिना आर्थिक विकास एवं उसके लिए आवश्यक साधनों को हम निश्चित नहीं कर सकेंगे। मंदिर के बाह्य स्वरूप का सम्पूर्ण विचार करते हुए भी हमें निश्चित रूप से यही कहना पड़ेगा कि मंदिर को उसके बाह्य स्वरूप के कारण नहीं, वरन् उसके भीतरी भाग में स्थापित भगवान की मूर्ति के कारण मंदिरत्व प्राप्त होता है। पश्चिमी दृष्टिकोण में, जिसका अन्धानुकरण करके हम अपने अर्थनीतिक मूल्यों की प्रतिष्ठापना करने चले हैं, ऐसे सर्वांगीण विचार का कोई स्थान नहीं होता।'

विश्व की वर्तमान भयावह परिस्थिति के विकल्प का निर्णय और निर्माण करने के चिन्तन और चिन्ता में लगे लोग आज इस बात का अनुभव करने लगे हैं कि शांति, सौहार्द और सुरक्षा के साथ-साथ स्थिर विकास का मार्ग भारतीय चिन्तन में ही है। पंडितजी ने बड़े ही सहज भाव से पश्चिमी देशों की जीवन पद्धति और व्यवस्था की आलोचना करते हुए कहा है कि 'लंका में सोने की ईंटे होंगी किन्तु वहाँ रामराज्य नहीं होगा।' आज भारत के अनेक आध्यात्मिक प्रवचनकर्ता विश्व की जिज्ञासा का समाधान करने में लगे हुए हैं, लेकिन इनसे विश्व को व्यवस्था प्रदान करने संबंधी विचार नहीं, आध्यात्मिक वार्ताएं ही सुनने को मिल रही हैं।

वर्तमान समय की आवश्यकताएँ केवल वैचारिक शांति के संदेशों से पूरी नहीं होगी। इसलिए लोक व्यवस्था का प्रबन्ध करना होगा। यह व्यवस्था केवल एकात्म मानवदर्शन की नींव पर ही खड़ी की जा सकती है। काल द्वारा किये जा रहे वैचारिक मंथन में अभी यह तय होना शेष हो सकता है कि कौनसी वैचारिकता वैश्विक प्रतिनिधित्व के योग्य है, लेकिन विकल्प के रूप में एकात्म मानवदर्शन के अतिरिक्त किसी भी दूसरे चिन्तन की भूमिका दिखाई नहीं दे रही है। साम्यवाद की विफलता समस्त संसार के सामने आ चुकी है तो पूँजीवाद की विफलता का दौर आरम्भ हो चुका। अमेरिका की आर्थिक मंदी को 1918 और 1990 की तरह इस समय कुछ प्रयासों से दूर कर लिया जाना सहज नहीं होगा। वर्तमान परिस्थितियाँ बहुत जटिल हो गई हैं। वर्तमान वैश्विक परिस्थिति एक नए विकल्प की माँग कर रही है। पूँजीवाद के उत्कर्ष ने विश्व को एक भयावह जंगल में ला खड़ा किया है। इसकी प्रतिक्रिया में अराजकता, आतंक और विनाश के दृश्य हमारे सामने हैं। पुनर्जीवन की तुलना में इस व्यवस्था का अंत अवश्यम्भावी लग रहा है। ऐसी दशा में सर्वात्मा को केन्द्र बनाकर विकसित वैचारिकता ही समीचीन हो सकती है। इस नवीन व्यवस्था का सिद्धांत है-एकात्ममानव दर्शन। निश्चय ही इसकी स्वीकृति सर्वप्रथम भारतभूमि पर होना आवश्यक है। अन्य देशों को इसका चरितार्थ रूप ही अनुकरणीय होगा।

पंडितजी का वचन है कि 'मानव मात्र के कल्याण की भावना किसी स्वार्थ कामना का परिणाम नहीं है। वह आत्मानुभूति की इच्छा और बोध का परिणाम है। मनुष्य अज्ञानवश उस आत्मशक्ति को संकुचित करने का प्रयास करता है।' पंडितजी द्वारा प्रतिपादित एकात्म मानवदर्शन में सुख की कामना एकांगी नहीं है। व्यक्ति का विचार वह समग्र दृष्टि से करता है इतना ही नहीं, मनुष्य के अंदर जो सत्प्रवृतियाँ होती हैं, वह उनका भी और विकास करता है। इस दर्शन में सुख वर्जित नहीं है। यदि कुछ वर्जित है तो वह है व्यक्ति और समाज के पतन का कारण बनने वाली सुखलोलुपता। यही सुखलोलुपता आज अशांति और आतंक का कारण बनी हुई है। इसका विकल्प हम 'एकात्म मानवदर्शन' में प्राप्त कर सकते हैं।

('भानुप्रताप शुक्ल समग्र' के खण्ड 12 से साभार)

एकात्म मानवदर्शन एक प्रत्यक्ष वर्हियोग है, जिसका लोक में प्रत्यक्ष और जीवन में अनुपालन हो सकता है। यह एक समग्र व्यवस्था सिद्धान्त है जिससे व्यक्ति, समाज और राष्ट्रजीवन अपना कायाकल्प करते हुए आगे बढ़ सकता है। इसकी वैश्विक भूमिका विश्व मानवता को आत्मवत् भावभय जीवन पद्धति और विकास का सर्वोत्तम मार्ग दे सकती है।

वात्सल्य गंगा में डुबकी लगाकर धन्य हुए अमेरिकावासी

विगत 1 से 25 सितम्बर तक पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी ने अपने विदेश प्रवास के अन्तर्गत संयुक्त राज्य अमेरिका के न्यूजर्सी, न्यूयॉर्क, शिकागो, ह्यूस्टन, मियामी, फोर्ट लॉडरडेल, मेलबोर्न, ओरलेंडो, और लॉज एंजिल्स में अमेरिकावासियों को अपने आध्यात्मिक प्रवचनों से मार्गदर्शित किया। इस दौरान भारत से दीदी माँ जी के साथ गईं साध्वी सत्यप्रिया जी, साध्वी समन्विता जी सहित 'परमशक्ति पीठ ऑफ अमेरिका' के पदाधिकारियों ने व्यवस्थाओं में सहयोग करते हुए आयोजन में श्रद्धापूर्वक भाग लिया। भारतीय मूल के श्रद्धालुजन इस आयोजन से अत्यन्त उत्साहित हुए। प्रस्तुत है प्रवास का सम्पूर्ण विवरण।

प्रत्येक स्थिति में हम ईश्वर के आभारी रहें

न्यूजर्सी

इस दुनिया में ऐसे अनेकों लोग हैं जो कहते हैं कि हम मूर्ख हैं, हम पापी हैं या हम अधूरे हैं। मेरे विचार में तो ये सोच ही गलत है। इस दुनिया में कोई अधूरा नहीं है। हाँ, ये जरूर हो सकता है कि आपके मन में कभी कोई गलत विचार आते हों लेकिन वो चले भी तो जाते होंगे? जैसे आसमान में काले बादल छाते हैं, गरज बरसकर चले जाते हैं या फिर बिना बरसे ही चले जाते हैं। अब इनमें निर्दोष और निर्मल है आकाश। बादल आते हैं और चले जाते हैं परन्तु आकाश वैसा का वैसा ही बना रहता है। ऐसा की कुछ विचारों का भी होता है। विचार आते-जाते रहेंगे परन्तु आप वैसे ही रहो, निर्मल और निर्दोष। तो इसके लिए आपको अपनी उस 'निर्दोष सत्ता' का बोध होना बहुत जरूरी है। अपने जीवन के बुरे पक्ष पर आत्मावलोकन तो करना चाहिए परन्तु कभी भी उसे अपने विचारों में स्थायी नहीं कर लेना चाहिए। क्योंकि हम जो विचार अपने मन में करते हैं, धीरे-धीरे हम वैसे ही होने लगते हैं। गुण और दोष से भरा हुआ है ये जगत।

कोई साधु ऐसा नहीं जिसके भीतर कभी असाधु भाव न आता हो और कोई असाधु भी ऐसा नहीं जिसके भीतर कभी साधुता न जागती हो। जीवन में वृत्तियों का आवर्तन होता रहता है। हमारा सनातन कहता है कि तुम शुद्ध हो, निर्दोष हो, निर्विकल्प हो, निर्द्वन्द्व हो, सच्चिदानंद हो, तो आप अपने उस स्वरूप से जब आपका परिचय हो जाता है, तब आपका जीवन एक सकात्मक लय में आगे बढ़ने लगता है। फिर आपको मान-अपमान, लाभ-हानि, हर्ष-विषाद और संयोग-वियोग कष्ट नहीं देते। जब आप सहजानन्द में जीते हैं तब आपके द्वारा मिट्टी को छूते ही वो सोना बन जाती है। ऐसी स्थिति में जेष्ठ की तपती दुपहरी में भी आप श्रावणी फुहारों की शीतलता को अनुभव कर सकते हैं। तब आपका शीश केवल परमात्मा के लिए ही झुकेगा क्योंकि उन्होंने जो कुछ भी दिया, उसका धन्यवाद। हम जीवन की प्रत्येक स्थिति में ईश्वर के प्रति आभार से भरे हों।

पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी के न्यूज़र्सी प्रवास में परमशक्ति पीठ ऑफ अमेरिका के श्रीमती मोहिनी एवं श्री रक्षपाल सूद, श्रीमती मीनू एवं सुनील शर्मा, श्रीमती श्वेता एवं श्री उमेश माहेश्वरी, श्रीमती सीता शर्मा, श्रीमती जनक एवं श्री चन्दर आनन्द, श्रीमती विद्या लाबरू, तथा श्रीमती नीरज एवं श्री प्रमोद भगत का विशेष मार्गदर्शन एवं सहयोग रहा।

न्यूयॉर्क

अपने न्यूयॉर्क प्रवास पर पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी ने हिन्दू समाज टेम्पल, जलाराम मन्दिर, साधु वासवानी टेम्पल तथा स्वामी दयानन्द आश्रम सहित अपने अनेक शिष्यगणों के निवास को अपनी चरण रज से धन्य किया

विश्व का गौरव बने हमारा सनातन धर्म

आपकी प्रातः का प्रथम स्वर क्या है? जैसे ही आपकी आँखें खुलती हैं, क्या विचार करते हैं आप? इस संसार में लाखों लोग रात को सोते हुए ही विदा हो जाते हैं। और हमनें आँखें खोलीं तो देखा कि पत्नी भी पास में है, सन्तानें भी पास में हैं, माँ-पिता भी हैं, भाई-बहन भी हैं। आज हमने नई सुबह देखी। यानि आज हमें जीवन मिल गया। वाह प्रभु! आपका लाख-लाख धन्यवाद कि आपने हमें एक और नई सुबह देखनी दी। क्या प्रतिदिन सुबह उठकर ईश्वर के प्रति ये अहोभाव आपके मन में आता है। यदि ये भाव आपके मन में आता है तो फिर पगों में नृत्य उतरता है। फिर आँखों में खुमारी आती है। फिर वाणी में भगवन्नाम सुमिरन उतरता है। यदि सुबह प्रथम स्वर ईश्वर के प्रति धन्यवाद का उठे तो समझ लीजिए कि आपका सारा दिन उत्सव के समान बीतने वाला है। धरती माता पर चरण रखने से पहले यदि उन्हें प्रणाम किया तो आपका धैर्य उनके ही समान सशक्त होगा। आँखें खुलते ही हमारी प्रभात में यदि परमात्मा का सुमिरन शामिल हो जाए तो फिर ये सुप्रभात बन जाती है। अपने जीवन के तथाकथित 'बोझों' से मुक्त होकर जरा ये विचार करें कि हमें ईश्वर ने क्या-क्या दिया है। क्योंकि आमतौर पर प्रत्येक मनुष्य केवल अपने जीवन के अभावों को ही टटोलता रहता है। उसका ध्यान कभी उन चीजों की ओर नहीं जाता, जो उसे प्राप्त हुई हैं। वो सदा ही अप्राप्त की ओर दौड़ लगाता रहता है। यही दौड़ उसे थका देती है, अवसाद में धकेल देती है। स्मरण रखियेगा कि लहर को अपना बोध प्राप्त करने के लिए हिमालय के शिखरों पर नहीं चढ़ना होता वो तो अपना 'लहरपना' खोकर सागर है ही। ठीक ऐसे ही हम स्वयं परमात्मा का अंश हैं, इस विवेक का जाग्रत हो जाना ही हमारी जीते-जी मुक्ति है। मैं परमात्मा में हूँ और परमात्मा मुझमें हैं, इस बात का बोध हमें निश्चिन्त करता है। लाभ-हानि का फिर कोई तराजू वहाँ होता नहीं। आप लोग भारत से इतनी दूर रहकर भी यहाँ पर भारत की सांस्कृतिक विरासत 'सनातन' के प्रचारार्थ ऐसे आयोजन करते हैं, आप सभी साधुवाद के पात्र हैं। इस समय आसुरी शक्तियाँ अपना सारा बल लगाकर सनातनी मूल्यों पर आक्रमण कर रही हैं। हम सबको भी अपनी सम्पूर्ण सामर्थ्य के साथ एकात्म सूत्र में बँधकर उनको अपनी शक्ति दिखानी है क्योंकि शान्ति वहीं होती है जहाँ शक्ति का दर्शन होता रहे। हमारा अध्यात्म 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना के साथ प्राणिमात्र का दर्शन करता है। केवल मनुष्य ही नहीं बल्कि चराचर जगत में परमात्म्य सत्ता का दर्शन करने वाले हम सनातनी सारे विश्व का गौरव बनें।

पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी के न्यूयॉर्क प्रवास में परमशक्ति पीठ ऑफ अमेरिका के श्रीमती दीपा एवं श्री बलराम आडवाणी, डॉ. कामिनी एवं श्री राकेश श्रीधर, डॉ. प्रज्ञा एवं श्री सुरेश खन्ना, डॉ. सीमा एवं श्री राजेश गुप्ता का विशेष मार्गदर्शन एवं सहयोग रहा।

शिकागो

शिकागो के माँ उमिया मन्दिर में प्रवचन करते हुए पूज्या दीदी माँ जी

तीनों युगों की स्त्री का अद्‌भुत दर्शन होगा श्री सर्वमंगला पीठम्

आज कई लोग सनातन पर प्रश्न उठा रहे हैं। क्या है सनातन? जिनका रथ जहाँ से भी गुजरता था तो उस राज्य के नरेश भी अपने शीश का मुकुट उतारकर धरती पर रख देते थे, वो भीष्म भी अम्बा के क्रोध से बच नहीं पाए। वो अम्बा जिन्हें भीष्म बलपूर्वक हस्तिनापुर ले आए थे। उसी अम्बा के प्रतिशोध ने भीष्म पितामह जैसे धर्मधुरन्धर योद्धा को भी शरशैया पर लेटा दिया था। यदि किसी नारी के मन को समझा नहीं जाए तो फिर उसका यही परिणाम होता है। जो मातृशक्ति अपना जीवन दाँव पर लगाकर सृष्टि का सर्वोत्तम करती है, वो विध्वंस करना भी जानती है। हमारी संस्कृति ने उसी 'अम्बा' यानि स्त्री को एक सम्मानजनक स्थान दिया है। ये है सनातन। यदि द्रोपदी के बारे में आपके मन के अन्दर बुरा विचार आएगा तो फिर 'महाभारत' होगा। यदि कोई जानकी के पल्लू को भी छूने का कुत्सित प्रयत्न करेगा तो फिर उसकी स्वर्णमयी लंका अग्नि की लपटों में पिघलाकर सागर की तलहटी में डुबो दी जाएगी। ये सनातन है। जिस स्त्री को हमारे सनातन में इतना सम्मान मिलता आया हो, यदि वो आज के युग में ये सोचती है कि उसे 'मुक्ति' चाहिए तो प्रश्न उठता है कि आखिर उसे किससे ये मुक्ति चाहिए? दूसरे धर्मों के बारे में मुझे कुछ नहीं कहना परन्तु हमारे धर्म में तो स्त्री-पुरुष के 'अर्द्धनारीश्वर' रूप का दर्शन किया जाता है। दोनों मिलकर एक आदर्श व्यक्तित्व के धनी बनते हैं। ये सनातन है। मैंने सनातन की इसी पावन संस्कृति का दर्शन आज की युवा पीढ़ी को वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन में निर्माणाधीन 'माँ सर्वमंगला पीठम्' में कराने के लिए भारत की इक्कीस महान नारियों को चुना है। मैं उनकी महान गाथा के साथ उनकी जीवन्त स्थापना वहाँ करना चाहती हूँ ताकि हमारी नवयौवना पुत्रियों को ये दृष्टि प्राप्त हो कि आखिर एक आदर्श नारी का आचरण कैसा होना चाहिए। उन्हें पता चलना चाहिए कि एक आदर्श नारी ममता का माधुर्य है। गूंगे का खाया गुड़ है वो। अर्थात् जिसकी ममता को अनुभव तो किया जा सकता है परन्तु वाणी से व्यक्त नहीं किया जा सकता। 'मनु स्मृति' को गाली देकर यदि आपकी संतानें केवल 'मैकाले स्मृति' को ही पढ़ती रहीं तो फिर उन्हें अपनी संस्कृति पर गौरव कैसे होगा? यदि उन्हें सप्तऋषियों के वैज्ञानिक अनुसंधानों से परिचित नहीं करवाया गया तो फिर वे कैसे जान सकेंगे कि विज्ञान के जो अविष्कार आज पश्चिमी जगत के नाम से जाने जाते हैं, उसके आधारभूत सिद्धान्तों को भारत के इन्हीं महान ऋषियों-महर्षियों ने प्रतिपादित किया था।

पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी के शिकागो प्रवास में परमशक्ति पीठ ऑफ अमेरिका के श्री अमर उपाध्याय, श्रीमती शिल्पा एवं श्री वीर शर्मा तथा श्री राजेन्द्र ठक्कर का विशेष मार्गदर्शन एवं सहयोग रहा।

फ्लोरिडा

ओरलेंडो, मेलबोर्न, फोर्ट लॉडरडेल एवं मियामी

आत्मानन्द में रहकर आगे बढ़ते रहिए

वस्त्रों को धोने के बाद उन पर चारों ओर सलवटें पड़ जाती हैं। जब आप उन पर स्त्री (प्रेस) करते हैं तो सारी सलवटों को हटा देते हैं। केवल एक 'क्रीज' बनाते हो, उसकी आस्तीनों पर सीधी सलवट के रूप में। जब सारी सलवटें हटा दीं तो फिर केवल एक ही क्यों रहनी दी आपने? इसलिए कि शर्ट सुन्दर दिख सके। बस यही अन्तर है चिन्ता और चिन्तन में। बहुत सारी सलवटें हमारे चिन्ताएँ होती हैं और 'क्रीज' के रूप में केवल एक सलवट हमारा चिन्तन। चिन्ताएँ हमारे वस्त्र रूपी जीवन को अस्त व्यस्त कर देती हैं परन्तु चिन्तन हमारे जीवन को एक दिशा देता है। ध्यान रखियेगा कि 'माया' कहीं बाहर नहीं होती, वो हमारे अपने मन के भीतर ही उपजती और समाप्त होती है। वही हम पर हावी होती है। उसका यही हावी होना हमारे दुःखों की जड़ है। आप अपने विचारों पर किसी भी ऐसी तृष्णा को हावी मत होने दीजिए, जो आपके सामने दुःखों के पहाड़ खड़े कर सकती हो। आत्मानन्द में रहिए और प्रगति के पथ पर आगे बढ़ते रहिए, फिर चिन्ता की कोई सलवट आपके जीवन की सुन्दरता को नहीं बिगाड़ सकेगी।

मियामी के डॉ.नरेन्द्र माहेश्वरी एवं श्रीमती प्रीति अपने निवास पर पूज्या दीदी माँ जी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए

मेलबोर्न, फ्लोरिडा में श्री विपुल पटेल के निवास पर

ओरलेंडो में श्री ब्रम्हरतन अग्रवाल के निवास पर उनके साथ श्रीमती कृष्णा जी, श्रीमती रोहिणी जी एवं श्री सुरेश गुप्ता को स्नेहाशीष प्रदान करते हुए

पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी के मियामी, ओरलेण्डो, फोर्ट लॉडरडेल एवं मेलबोर्न प्रवास में परमशक्ति पीठ ऑफ अमेरिका के श्री शेखर रेड्डी, डॉ.चन्द्रशेखर, डॉ.नरेन्द्र एवं श्रीमती प्रीति माहेश्वरी, श्रीमती कृष्णा एवं श्री ब्रम्हरतन अग्रवाल, श्रीमती रोहिणी एवं श्री सुरेश गुप्ता, श्रीमती दीपिका एवं श्री विनीत गुप्ता तथा श्री विपुल पटेल का विशेष मार्गदर्शन एवं सहयोग रहा।

ह्यूस्टन
टेक्सॉस

ह्यूस्टन के सनातन शिवशक्ति मन्दिर में प्रवचन देते हुए पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी

कर्ताभाव को समाप्त करके ही मुक्त हुआ जा सकता है

अध्यात्म के पथ पर चलते हुए हमारा विवेक इतना परिपक्व हो कि हमें इस जगत को छोड़ना न पड़े बल्कि ये स्वतः ही छूट जाए। ठीक वैसे ही, जैसे एक पका हुआ नारियल अपने खोल को छोड़कर सम्पूर्ण रूप से बाहर निकल आता है। कच्चा नारियल खुरच खुरचकर प्रयत्न करने पर भी अपनी सम्पूर्णता के साथ खोल से बाहर नहीं निकलता। उसका कुछ न कुछ हिस्सा खोल के साथ चिपका रह ही जाता है। जगत को छोड़ने से आशय ये नहीं है कि आपको अपना घर-परिवार छोड़कर किसी जंगल में चले जाना है। 'वैराग्य' का आशय संसार को त्याग देना भी नहीं है। इस जगत को त्यागपूर्वक भोगना ही वैराग्य है। आप अपनी बुद्धि और परिश्रम के बल पर अर्थोपार्जन करें, सुख-सुविधाओं का भोग भी करें परन्तु विवेकपूर्वक। आप जो कुछ भी कमा रहे हैं, उसे ईश्वर की कृपा मानकर ये समझें कि वो कमाई केवल हमारे लिए ही नहीं है बल्कि उसका कुछ भाग जरूरतमंदों तक भी पहुंचना चाहिए। हमें ये बात समझनी चाहिए कि ईश्वर ने हमें अपनी योजना के लिए उपकरण मात्र बनाया है। तो हमें दूसरों के लिए अपने पदार्थ छोड़ने की कोशिश नहीं करनी है बल्कि वो स्वतः ही हमसे छूट जाएं, तब हमें आनन्दानुभूति होगी।

आप जिस दिन उपवास करते हो उस दिन यदि भोज्य पदार्थों के प्रति आपके मन की लालसा तीव्र हो उठती है तो इसका अर्थ है कि उपवास आपने मन से किया ही नहीं। मन की माया बड़ी विचित्र है। जिस बात के लिए उसे रोका जाए, वो उधर ही भागता है। तो इसे रोकने के लिए बलात् प्रयोग करना भी मूर्खता है। इससे बात बनने वाली नहीं है। इस बात को बनाने के लिए एक ही उपाय है कि आप इस जगत में आपने जो कुछ भी अर्जित किया है, उसके लिए अपने कर्ताभाव को समाप्त कर दें। ऐसा होने पर सबसे पहली अच्छी बात ये होगी कि आपका अहंकार कम होने लगेगा। जब अहंकार कम होते-होते समाप्त हो जाएगा, तब फिर आप इस तथाकथित माया जगत से मुक्त होने की दिशा में बढ़ जाएंगे। आप पुरुषार्थ तो करेंगे और अनेकों उपलब्धियाँ भी अर्जित करेंगी लेकिन फिर वो सब कृष्णार्पण होते हुए औरों को भी सुख देने वाली होंगी। जब आप पदार्थों को पकड़ेंगे नहीं तो फिर आप जीते-जी मुक्त होंगे। पद-प्रतिष्ठाओं के मकड़जाल आपको जकड़ेंगे नहीं। मान-अपमान के भँवर से निकल, आप ज्ञानगंगा में निमज्जित होकर धन्य हो जाएंगे।

पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी के ह्यूस्टन प्रवास में श्रीमती उमा एवं श्री गोपाल अग्रवाल, श्रीमती सरोज एवं श्री सुभाष गुप्ता तथा श्रीमती किरण एवं श्री रमेश भूताड़ा का विशेष सहयोग रहा।

लॉस एंजिल्स
केलिफोर्निया

लॉस एंजिल्स के राधारमण वैदिक टेम्पल में प्रवचन देते हुए पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी

अयोध्या आंदोलन की जनचेतना पूज्या दीदी माँ जी

– साध्वी सत्यप्रिया

पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी के अमेरिका प्रवास का समापन केलिफोर्निया प्रान्त के लॉस एंजिल्स नगर में हुआ। इस अवसर पर स्थानीय 'राधारमण वैदिक टेम्पल' में समापन समारोह सभा को संबोधित करते हुए उनकी शिष्या साध्वी सत्यप्रिया जी ने कहा कि –'पूज्या दीदी माँ जी ने इस राष्ट्र और सनातन धर्म के गौरव की प्रतिष्ठापना के लिए एक लम्बा संघर्ष किया है। श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति आंदोलन इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। हमारे दादागुरु श्री युगपुरुष जी महाराज के पावन मार्गदर्शन और आशीर्वाद को पाकर पूज्या दीदी माँ जी ने सम्पूर्ण भारत में हिन्दुत्व की गर्जना की। कई वर्षों तक इस आंदोलन में भाग लेते हुए उन्होंने देशभर के सोये हुए हिन्दुत्व को अपनी हुंकार से जाग्रत किया। एक-एक दिन में उन्होंने आठ या दस सभाएँ तक कीं। लाखों-लाख लोगों का अपार जनसमूह उन्हें सुनने के लिए उमड़ पड़ता था। उनके प्रवचन इतने प्रभावी होते थे कि सारे भारत का हिन्दू समाज जाति पांति की सीमाएँ तोड़कर एकता के सूत्र में बँध गया। प्रतिकूलताएँ इतनी थीं कि राजनैतिक कारणों से दुर्भावनावश उन पर देश के कई स्थानों के प्रशासन ने झूठे मुकदमे तक दर्ज किये। कई बार ऐसा भी हुआ कि पुलिस प्रशासन से बचने के लिए उन्हें अपना वेश तक बदलकर निकलना पड़ा। आज अयोध्या में प्रभु श्री रामलला के जिस मंदिर को निर्मित होते हुए हम देख रहे हैं, उसके लिए पूज्या दीदी माँ जी ने अहर्निश संघर्ष किया है।

वृन्दावन में वात्सल्य की सृष्टि खड़ी करके उन्होंने मानवसेवा के क्षेत्र में अद्भुत कार्य किया है। आप सबके पावन सहयोग से आज इस प्रकल्प में निःशुल्क शिक्षा, चिकित्सा तथा मातृशक्ति स्वावलंबन के अनेक कार्य संचालित किये जा रहे हैं। उनकी पावन प्रेरणा से देश के अनेक राज्यों में वात्सल्य ग्रामों की स्थापना करके सेवाकार्यों का संचालन किया जा रहा है। आप सब भारत से इतनी दूर अमेरिका में रहकर भी उनके इन्हीं सब सेवा प्रकल्पों में सहयोग करते हैं, सचमुच आप सौभाग्यशाली हैं।

पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी के लॉस एंजिल्स प्रवास में परमशक्ति पीठ ऑफ अमेरिका के श्रीमती मुक्ता एवं श्री अनिल अग्रवाल, श्रीमती उमा एवं श्री अवधेश अग्रवाल, श्रीमती मोना एवं श्री अनिल पारिख, श्री बसंत राठी, श्री अभिनव मेहता, श्री भरत सोलंकी तथा श्रीमती सुक्खी एवं श्री अजय कश्यप का विशेष मार्गदर्शन एवं सहयोग रहा।

अमेरिका प्रवास के आत्मीय क्षणों में 'वात्सल्य परिवार' के साथ पूज्या दीदी माँ जी

पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी के न्यूजर्सी पहुँचने पर उनका स्वागत करते हुए नीलम जी, मीनू जी एवं रश्मि जी। साथ हैं साध्वी सत्यप्रिया जी।

डॉ.जनक एवं श्री चन्दर आनन्द के न्यूजर्सी स्थित निवास पर आत्मीय क्षणों में

न्यूजर्सी स्थित श्रीकृष्ण एवं श्रीमती बबली नरुला पूज्या दीदी माँ जी का आशीर्वाद प्राप्त करते हुए। अपने निवास पर वर्षों पूर्व स्थापित पूज्या दीदी माँ जी की चरण पादुकाओं का पूजन ये आज भी भक्तिभाव से करते हैं।

न्यूजर्सी स्थित श्रीमती विद्या लाबरु को अपना स्नेहाशीष प्रदान करते हुए पूज्या दीदी माँ जी

ह्यूस्टन में श्री अनिल एवं श्रीमती मुक्ता अग्रवाल पूज्या दीदी माँ जी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए

लॉस एंजिल्स में श्री अवधेश अग्रवाल पूज्या दीदी माँ जी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए

कनाड़ा निवासी रुचि परमानंद की बेटी केशवी को लॉस एंजिल्स में अपना वात्सल्य प्रदान करते हुए पूज्या दीदी माँ जी

न्यूयॉर्क में श्री बलराम आडवाणी एवं श्रीमती दीपा आडवाणी को अपना स्नेह प्रदान करते हुए

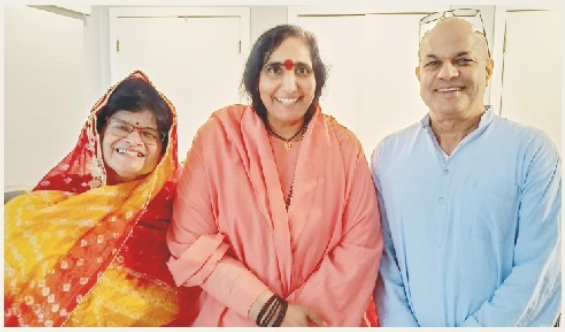

डॉ.राकेश श्रीधर एवं श्रीमती कामिनी श्रीधर के न्यूयॉर्क स्थित निवास पर

न्यूयॉर्क में डॉ.राजेश एवं श्रीमती सीमा गुप्ता के निवास पर उनके परिवार के साथ

लॉस एंजिल्स के श्री अजय एवं श्रीमती सुख्खी कश्यप पूज्या दीदी माँ जी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए

श्री विनीत जी एवं श्रीमती देविका गुप्ता के मियामी स्थित निवास पर

परमशक्ति पीठ ऑफ अमेरिका के अध्यक्ष श्री अनिलभाई पारीख आशीर्वाद प्राप्त करते हुए

परमशक्ति पीठ ऑफ अमेरिका के श्री रामजीभाई पटेल आशीर्वाद प्राप्त करते हुए

साध्वी सत्यप्रिया जी एवं साध्वी समन्विता जी, श्री गुरुचरणों में

इस यात्रा को परमशक्ति पीठ के अंतर्राष्ट्रीय सम्पर्क प्रमुख श्री रामजीभाई पटेल, परमशक्ति पीठ की संगठन प्रमुख साध्वी सत्यप्रिया जी, पूज्या दीदी माँ जी की सेविका के रूप में साध्वी समन्विता जी एवं भजन मंडली ने अपनी निष्ठा एवं परिश्रम से इस प्रवास को सफल बनाने में अविस्मरणीय योगदान प्रदान किया। साध्वी समन्विता जी की मधुर वाणी ने सभी आयोजनों को भक्तिरस से ओतप्रोत कर दिया। उनके कोकिल कण्ठी सुरधारा ने श्रोताओं को भावविभोर कर दिया।

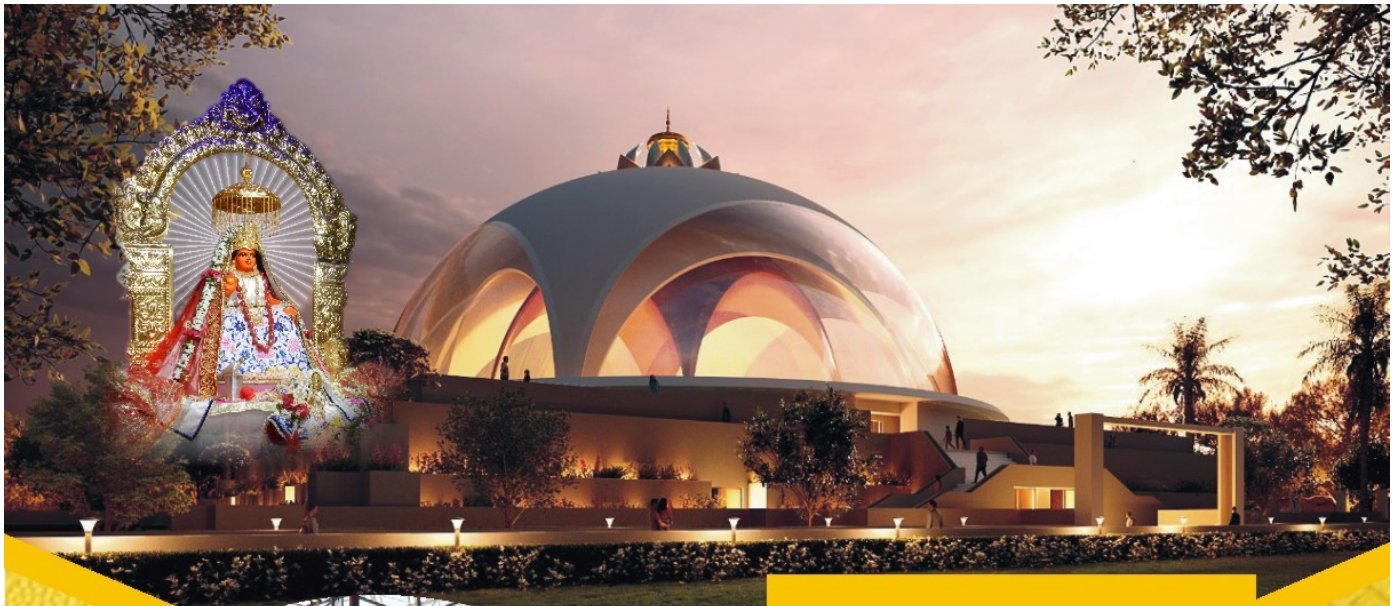

वात्सल्य ग्राम
वृन्दावन में निर्माणाधीन

श्री सर्वमंगला पीठम्

विशेषताएँ :

- लगभग डेढ़ लाख वर्गफीट क्षेत्रफल में विस्तारित एवं एक सौ चौदह फीट की ऊँचाई लिए हुए श्री सर्वमंगला पीठम् शिल्पकला की दृष्टि से अद्वितीय होगा।
- रज, तम और सत्व गुणों को प्रदर्शित करती इसकी तीन पारदर्शी छतें मध्य से बिना किसी सहारे के निर्मित होंगी।
- इन विशाल छतों के ठीक नीचे माँ सर्वमंगला अपने सृजनात्मक, कल्याणक, वात्सल्यमयी तथा माधुर्य रूप में विराजेंगी।
- पीठम् की तल मंजिल पर एक अत्याधुनिक प्रदर्शनी होगी, जिसके माध्यम से सतयुग, त्रेता, द्वापर एवं कलियुग में भारतीय नारी की भूमिका के सुनहरे अध्यायों को दर्शाया जाएगा। प्रथम मंजिल पर माँ सर्वमंगला माता के चारों ओर चलित परिक्रमा पथ होगा।
- मन्दिर के चारों ओर स्टेडियमनुमा सीढ़ियों का निर्माण किया जा रहा है, जहाँ बैठकर श्रद्धालुगण माता का मनोहारी दर्शन कर सकेंगे। मन्दिर भवन के चारों ओर नयनाभिराम बाग–बगीचे भी होंगे, जिनमें बैठकर श्रद्धालुओं को अनुपम शान्ति का अनुभव होगा।

श्री सर्वमंगला पीठम् के निर्माण में

एक ईंट हेतु मात्र 1100/– का सहयोग समर्पित कर पुण्य लाभ प्राप्त करें।

आप अपनी सहयोग राशि का चेक अथवा डिमाण्ड ड्राफ्ट 'परमशक्ति पीठ' के नाम से सम्पूर्ण भारत में किसी भी शाखा से जमा करवा सकते हैं।

5,00,000/- (पाँच लाख रुपयों) की सहयोग राशि समर्पित कर 'माँ सर्वमंगला न्यास' के न्यासी बनने हेतु सम्पर्क करें – 011-22238751, 22238757

बैंक का नाम : यूनियन बैंक ऑफ इंडिया
खाते का नाम : परमशक्ति पीठ
खाता संख्या : 520101244630425
IFS Code : UBIN0905321
MICR : 110026344
शाखा : सी–50, प्रीत विहार, दिल्ली

आध्यात्मिक प्रवास पर
यूनाइटेड किंगडम में साध्वी सुहृदय गिरी जी

लन्दन (यू.के.)

परमशक्ति पीठ ऑफ यू.के. की डॉ.हर्षा जानी ने बताया कि विगत दिनों पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी की शिष्या साध्वी सुहृदय गिरि जी का यू.के. प्रवास सम्पन्न हुआ, जिसके अन्तर्गत उन्होंने केन्ट में रामकथा और बर्मिंघम में अपने आध्यात्मिक प्रवचनों के साथ ही परमशक्ति पीठ की योजनाओं एवं उनके उद्देश्यों पर चर्चा की।

यू.के. में संस्था के कार्य के विस्तार हेतु कार्यकर्ता निर्माण एक प्राथमिकता बनी हुई है और साध्वीजी का यह प्रवास इस दृष्टि से महत्वपूर्ण रहा। उन्होंने स्थानीय लोगों से मिलते हुए प्रेम, करुणा एवं कर्मनिष्ठा का संदेश बहुत ही स्पष्टता से साझा किया जो सनातन धर्म का मूल बताते हुए इस समय सनातन धर्म पर हो रहे आघातों के बारे में भी चेताया।

यूनाइटेड किंगडम में अपने आध्यात्मिक प्रवास के दौरान
पी.एस.पी. (यू.के.) पदाधिकारियों तथा स्थानीय भारतीय समुदाय के साथ साध्वी सुहृदय गिरी जी

मधुमेह (डायबिटीज़)
शारीरिक बदलाव महसूस कर सतर्क रहें

'इंडियन कौंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च' और 'मद्रास डायबिटीज रिसर्च फाउंडेशन' द्वारा जून 2023 में करवाया गया सर्वे बताता है कि भारत में इस समय लगभग दस करोड़ लोग डायबिटीज़ (मधुमेह) रोग से पीड़ित हैं। इसके अतिरिक्त तेरह सौ करोड़ लोग प्री-डायबिटिक हैं। प्री-डायबिटिक में से आधे अगले पाँच वर्षों में डायबिटीज के शिकार हो सकते हैं।

हमारे शरीर के भीतर मौजूद कोशिकाएँ ऊर्जा प्राप्त करने के लिए शुगर पर ही निर्भर होती हैं। ये शुगर उन तक तभी पहुँच पाती है जब इंसुलिन हार्मोन सही तरीके से काम कर रहा हो। खानपान में अनियमितता और आलस्यपूर्ण जीवन शैली से इंसुलिन की कार्यक्षमता कम हो जाती है और पैंक्रियाज कार्यप्रणाली अत्याधिक दबाव में आ जाती है। पैंक्रियाज की यही शिथिलता, शुगर लेवल को गड़बड़ा देती है। शरीर में निर्धारित मात्रा से अधिक शुगर का होना आपके दिल, किडनी, न्यूरो सिस्टम, आंखों और दिमाग पर विपरीत असर डाल सकता है।

शुगर लेवल असामान्य होने पर शारीरिक संकेत

अधिक प्यास लगना और यूरिन की अधिकता

शरीर में शुगर की मात्रा बढ़ने पर हमारी किडनियाँ उसे रोकने की कोशिश में उसे यूरिन के माध्यम से बाहर फेंकने का प्रयत्न करती हैं जिसके लिए शरीर को टिश्यू से अधिक पानी खींचना पड़ता है। ऐसी स्थिति में प्यास अधिक लगती है और बार-बार पेशाब आता है।

धुंधला दिखाई देना

जब शुगर की मात्रा को कम करने के लिए शरीर टिश्यू से पानी अधिक अवशोषित करने लगता है तब आंखों के लेंस में फ्लूड का स्तर बदलने लगता है। अमेरिका के नेशनल इंस्टीट्यूट अहफ डायबिटीज एंड डाइजेस्टिव एंड किडनी डिसीज (एनआईडीडीके) के अनुसार इससे आंखों को फोकस करने में दिक्कत होती है। धुंधला दिखने लगता है।

ब्रेन फॉग, सिर दर्द

शुगर मस्तिष्क की कार्य प्रणाली को भी प्रभावित करती है, जिससे याददाश्त में कमी, स्पष्ट रूप से सोचने में दिक्कत और एकाग्रता प्रभावित होती है। प्री-डायबिटिक और डायबिटिक दोनों ही स्टेज में भोजन के 3 से 5 घंटे के बाद, भी मस्तिष्क को पर्याप्त ऊर्जा नहीं मिलती है, जिससे कंफ्यूजन, सिर दर्द, चक्कर आने जैसी समस्याएं होती हैं।

बार-बार संक्रमण

शुगर की अधिक मात्रा शरीर में बैक्टीरिया, फंगस और अन्य रोगजनकों के लिए वातावरण तैयार करती है। इससे व्यक्ति को बार-बार संक्रमण होता है। खासकर यूरीनरी ट्रैक्ट, जननांगों में फंगल संक्रमण और फोड़े-फुंसी जैसे संक्रमण अधिक होते है। अधिक शुगर के कारण घाव भरने में भी समय ज्यादा लगता है।

शरीर का जल्दी थकना

शुगर की अधिक मात्रा का अर्थ है इसका रक्त में ही घूमते रहना। दरअसल इंसुलिन की कमी के कारण यह ऊर्जा में नहीं बदल पाती। इसलिए कोशिकाओं को जरूरी ग्लूकोज और ऊर्जा नहीं मिलती, जिससे थकान होती है। इसके अलावा अधिक शुगर के कारण डिहाइड्रेशन व इंफ्लामेशन से भी थकान बढ़ती है।

बीपी और खराब नींद

डायबिटीज होने के लगभग 10 वर्ष पहले से रक्त नलिकाओं में बदलाव आने लगते है। यह इंसुलिन रेजिस्टेंस की वजह से होता है। ब्लड प्रेशर और हार्ट बीट अनियमित होती है, इससे बीपी की समस्या होने लगती है। हृदय रोगों का खतरा बढ़ता है। शरीर में कंपन एवं पसीना आने लगता है। नींद प्रभावित होने लगती है।

डायबिटीज एक गंभीर बीमारी है जिससे, आपको आजीवन परेशानियाँ हो सकती हैं। डायबिटीज से पीड़ित व्यक्ति को स्वास्थ्य से जुड़ी कई तरह की परेशानियां झेलनी पड़ सकती हैं परन्तु कुछ सावधानियाँ के द्वारा डायबिटीज की बीमारी से बचा जा सकता है।

- मीठा कम खाएं। शक्कर से भरी और रिफाइंड कार्बोहाइड्रेट वाला भोजन करने से बचें।
- एक्टिव रहें, एक्सरसाइज करें, सुबह-शाम टहलने जाएं।
- पानी अधिक पीयें। शर्बत और सोडा वाले ड्रिंक्स पीने से बचें। आइसक्रीम, कैंडीज खाने से भी परहेज करें।
- अपना वजन नियंत्रण में रखें। स्मोकिंग और अल्कोहल लेने से परहेज करें।
- हाई फाइबर डायट लें। प्रोटीन का सेवन भी अधिक मात्रा में करें।
- विटामिन-डी की कमी ना होने दें क्योंकि, इसकी कमी से भी डायबिटीज का खतरा बढ़ता है।

स्वामी परमानन्द प्राकृतिक चिकित्सालय, योग एवं अनुसंधान केन्द्र, नई दिल्ली

आयुर्वेद,
प्राकृतिक चिकित्सा एवं
योग द्वारा रोग निदान

रोगी सुरक्षा एवं उपचार गुणवत्ता हेतु एन.ए.बी.एच.
(National Accreditation Board for Hospitals & Healthcare Providers)
द्वारा प्रमाणित हॉस्पिटल

सुविधाएँ

- 40,000 वर्गफीट में निर्मित विशाल हॉस्पिटल
- सुविधापूर्ण एवं सुव्यवस्थित आवासीय कक्ष
- महिलाओं एवं पुरुषों हेतु अलग-अलग चिकित्सा कक्ष
- 3000 वर्गफीट में निर्मित योगा हॉल
- 2500 वर्गफीट में निर्मित फिटनेस सेन्टर
- फिजियोथैरेपी सेन्टर
- लायब्रेरी
- अत्याधुनिक डाइनिंग हॉल
- फार्मेसी आउटलेट

पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार के चिकित्सकों द्वारा उत्कृष्ट चिकित्सा सेवाएँ, यहाँ संचालित 'पतंजलि वेलनेस सेंटर' में उपलब्ध हैं

रुम चार्जेस (7 दिनों के लिए)

जनरल वार्ड	— 14,000/- (एक व्यक्ति हेतु)
स्टेंडर्ड रुम	— 21,000/- (एक व्यक्ति हेतु)
	— 31,000/- (दो व्यक्तियों हेतु)
डीलक्स रुम	— 38,000/- (एक व्यक्ति हेतु)
	— 56,000/- (दो व्यक्तियों हेतु)

विशेष चिकित्सा

गठिया रोग, चर्म रोग / सोरियासिस, पेट रोग, मानसिक रोग, मधुमेह एवं उच्च रक्तचाप, हृदय रोग, स्त्री एवं पुरुष गुप्त रोग, मोटापा, किडनी रोग, लीवर रोग, जोड़ों का दर्द एवं लकवा

- पंचकर्म, एक्यूप्रेशर, फिजियोथैरेपी एवं औषधियों का शुल्क अलग रहेगा।
- उपरोक्त रूम चार्जेस में नेचुरोपैथी, योगा एवं भोजन सम्मिलित है, जो अग्रिम रूप से देय होगा।
- संबंधित डॉक्टर के निर्देशन पर ही ट्रीटमेंट पैकेज को आगे बढ़ाया जा सकेगा।
- डॉक्टर द्वारा निश्चित उपचार की निर्धारित अवधि से पूर्व हॉस्पिटल से स्वयं ही डिस्चार्ज लेने वालों को किसी भी रूप में जमा किये गए चार्जेस का रिफण्ड नहीं किया जाएगा।
- रोगी के साथ रहने वाले व्यक्ति का शुल्क 1000 रुपये प्रतिदिन अलग से लिया जाएगा।

बुकिंग संबंधी सम्पर्क नंबर – 8287445808, 8287447197 **तथा** 22478881/3
भुगतान संबंधी सम्पर्क नंबर – 8287443203

नरवाना रोड, ब्लॉक-ई, पश्चिम विनोद नगर, आंबेडकर पार्क के पास, नई दिल्ली – 110092
वेबसाइट : www.sppc.in सहित facebook, youtube, instagram पर भी विजिट करें

वात्सल्य प्रकाशन की प्रस्तुतियाँ...

पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी के पावन विचारों से युक्त साहित्य परमशक्ति पीठ के 'वात्सल्य प्रकाशन' द्वारा प्रकाशित किया जाता है, जो आपको जीवन की अनेक समस्याओं के सरल समाधान देता है। आप भी इन पुस्तकों को पढ़कर अपना जीवन सकारात्मक रूप में परिवर्तित कर सकते हैं।

वात्सल्य साहित्य

01. आत्मसुख की ओर
02. सद्गुरु - बन्धनों के मुक्तिदाता
03. योग - सफल जीवन का रहस्य
04. सार्थक जीवन के सूत्र
05. यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते
06. जीवन का परमानन्द
07. साधना के पथ पर
08. जागो भारत की नारी
09. सद्गुरु - जीवन की आवश्यकता
10. माँ - सृष्टि की धुरी
11. मुझे बचाओ माँ
12. परमशक्ति योग (हिन्दी)
13. परमशक्ति योग (अंग्रेजी)
14. यशोदा भाव - वात्सल्य ग्राम की मूल प्रेरणा
15. अनुभूति
16. पाथेय
17. व्यक्तित्व और विचार
18. मेरी स्मृतियों के भानु भैया
19. शुभाशीष
20. युगपुरुष की युगयात्रा
21. पिबत भागवतं रसमालयम्
22. नया सवेरा लाओ (काव्य संग्रह)
23. साधना के स्वर (भजन संग्रह)
24. भजन वर्षा (भजन संग्रह)
25. मेरी छोटी सी है नाव (भजन संग्रह)
26. वात्सल्य
27. श्रीमद्भगवद्गीता
28. निरामय प्राकृतिक चिकित्सा
29. चतुर्मुखी प्राकृतिक चिकित्सा
30. मसाले भी औषधियाँ हैं

पूज्या दीदी माँ जी के प्रवचनों की पेन ड्राईव भी उपलब्ध है

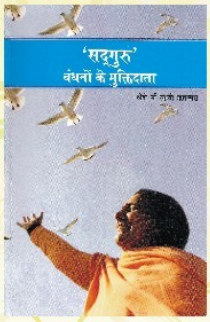

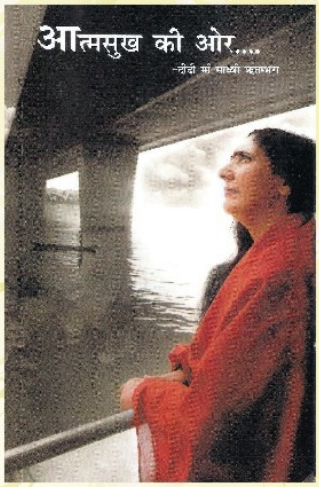

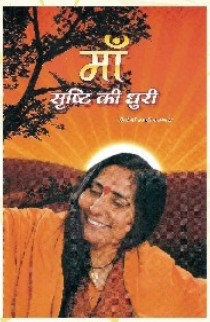

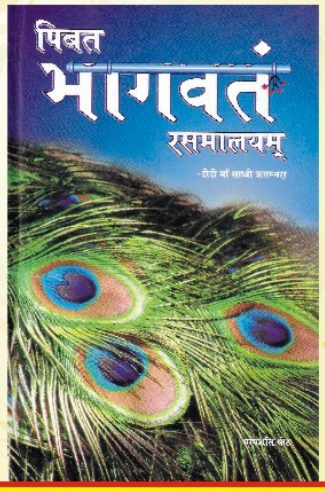

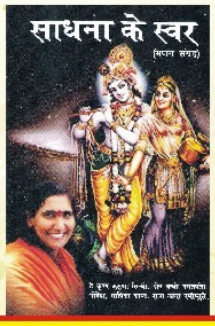

उपरोक्त साहित्य मंगवाने के लिए 'परमशक्ति पीठ' के नाम से चेक अथवा डिमांड ड्राफ्ट बनवाकर निम्न पते पर भेज सकते हैं। पैकिंग और डाक व्यय आपके द्वारा ही देय होगा।

केन्द्रीय कार्यालय

परमशक्ति पीठ

लव-102, अग्रसेन आवास, 66 इन्द्रप्रस्थ विस्तार,
नई दिल्ली - 110092,
सम्पर्क फोन नं. - 01122238751, 9958885858
ईमेल - info@vatsalyagram.org
वेबसाइट - www.vatsalyagram.org

शाखा कार्यालय

वात्सल्य ग्राम

मथुरा-वृन्दावन मार्ग,
पोस्ट - प्रेमनगर
वृन्दावन, जिला - मथुरा (उत्तरप्रदेश) पिन-281003
सम्पर्क फोन नंबर : 9412777151

परमशक्ति पीठ के सेवा प्रकल्प

वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन

के विभिन्न आयामों हेतु आपके आर्थिक सहयोग का स्वागत है

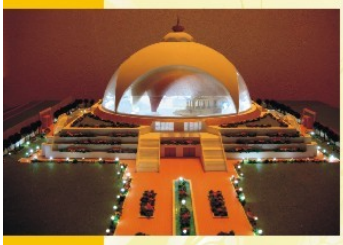

परमशक्ति पीठ में आपका सहयोग

आजीवन सहयोगी	1,00,000/-
संस्थापक सहयोगी	5,00,000/-
कार्पोरेट सहयोगी	11,00,000/-

वत्सल निधि में आपका सहयोग

शिक्षा निधि (वार्षिक)	6000/-
वत्सल निधि (एक सुविधा) वार्षिक	24,000/-
वत्सल निधि (शिक्षा, स्वास्थ्य, भोजन, होस्टल, अन्य) वार्षिक	1,20,000/-
बच्चों का एक समय का भोजन	21,000/-

वैशिष्ट्यम् स्कूल (दिव्यांग बच्चों हेतु) में आपका सहयोग

दिव्यांग बच चों की समुचित देखभाल हेतु (वार्षिक)	1,50,000/-

चिकित्सा सेवाओं में आपका सहयोग

वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन के प्रेमवती गुप्ता नेत्र चिकित्सालय में आयोजित होने वाले निःशुल्क मोतियाबिन्द ऑपरेशन शिविरों हेतु (एक रोगी के ऑपरेशन हेतु)	3000/-
ग्रामीण क्षेत्रों में आयोजित होने वाले निःशुल्क स्वास्थ्य शिविरों हेतु (प्रति शिविर)	51,000/-

श्री सर्वमंगला पीठम् में आपका सहयोग

संस्थापक सहयोगी	5,00,000/-
एक शिला सहयोगी	1100/-

गौ सेवा में आपका सहयोग

वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन की 'कामधेनु गौगृह गौशाला' हेतु

प्रति गौमाता सहयोग (मासिक)	3100/-
प्रति गौमाता सहयोग (वार्षिक)	36,000/-
गौवंश हेतु भूसा सहयोग (दैनिक)	11,000/-
गौवंश हेतु हरा चारा सहयोग (दैनिक)	5100/-
गौ दान राशि	50,000/-

Param Shakti Peeth
Vatsalya Gram, Vrundavan

Your Donetion is welcome for our various service projects

Your Donation for Param Shakti Peeth

Life Member	1,00,000/-
Founder Member	5,00,000/-
Corporate Member	11,00,000/-

Your Donation for Vatsal Nidhi

Shiksha Nidhi (Annual)	6000/-
Vatsal Nidhi (For one facility) Annual	24,000/-
Vatsal Nidhi (Education, Health, Meal, Hostel etc.) Annual	1,20,000/-
One time meal for children	21,000/-

Your Donation for Vaishishtyam school

For proper care of disabled children (Annual)	1,50,000/-

Your Donation for Medical Services

For cataract operation camps to be organized at Premvati Gupta Eye Hospital, Vatsalya Village] Vrindavan (For operation of one pataint)	3000/-
For free health camps to be organized in rural areas	51,000/-

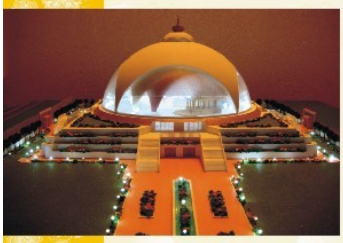

Your Donation for Shri Sarvmangla Peetham

Founder Member	5,00,000/-
One Brick donation	1100/-

Your Donation for Cow Shed

For Kamdhenu Gaugruh Gaushala of Vatsalya Gram

For One cow (Monthly)	3100/-
For One cow (Yearly)	36,000/-
Straw for cattle (Daily)	11,000/-
Green fodder cooperation for cattle (Daily)	5100/-
Cow donation fund	50,000/-

वात्सल्य ग्राम के साथ जुड़ने के लिए धन्यवाद

परमशक्ति पीठ के सेवाकार्यों में आप अपना सहयोग इस प्रकार दे सकते हैं :

बैंक खातों में सीधे जमा करने के लिए जानकारियाँ

बैंक का नाम : पंजाब नेशनल बैंक
खाता क्रमांक : 1518000101014134
आई.एफ.एस.सी. कोड : PUNB0151800

बैंक का नाम : स्टेट बैंक ऑफ इन्डिया
खाता क्रमांक : 10137296689
आई.एफ.एस.सी.कोड : SBIN0007085

दान के लिए ऑनलाइन लिंक :
https://www.vatsalyagram.org/donate
दान के लिए पेटीएम नंबर :
88268 88001

चेक अथवा डिमांड ड्राफ्ट द्वारा भी दान राशि परमशक्ति पीठ कार्यालय में भेजी जा सकती है।

दान के लिए कृपया इस क्यू.आर.कोड को स्कैन करें

प्रधान कार्यालय का पता :
परमशक्ति पीठ
लव–102, अग्रसेन आवास,
66, इन्द्रप्रस्थ विस्तार, पटपड़गंज, नई दिल्ली –110092
सम्पर्क सूत्र : 011-22238751, 9999971714, 9999971716
ईमेल : donorcare@vatsalyagram.org **वेबसाइट** : www.vatsalyagram.org

आपका सहयोग आयकर अधिनियम की धारा 80G के अन्तर्गत करमुक्त है।

योगदान प्रपत्र

जी हाँ, मैं वात्सल्य ग्राम के सेवा प्रकल्पों में अपना योगदान देना चाहता हूँ / चाहती हूँ।
मेरा व्यक्तिगत विवरण इस प्रकार है।

श्री/श्रीमती/कुमारी _____
व्यवसाय _____
पता _____
_____ पिनकोड _____
सम्पर्क फोन नंबर _____
ईमेल आई.डी. _____
दान राशि (अंकों में) _____ (शब्दों में) _____

।। ॐ आदित्याय विद्महे दिवाकराय धीमहि तन्नो सूर्यः प्रचोदयात् ।।

अपने अमेरिका प्रवास के दौरान मियामी (फ्लोरिडा) में श्री विनीत गुप्ता के निवास से सूर्योदय का पावन दर्शन करते हुए पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी

Donation Form

Yes, I want to contribute for Vatsalya Gram. My personal details are :

Mr./Mrs/Ms :.....
Occupation :.....
Address :.....
Pin Code :.....
Phone No. :..... Mobile No. :.....
email :.....
Donation Amount (In digits) :.....(In words) .....

Thanks for join hands with Vatsalya Gram

You can dontate your donation directly in following banks :

Bank name	: Pujab National Bank	Bank name	: State Bank Of India
A/c. No.	: 1518000101014134	A/c. No.	: 10137296689
IFSC Code	: PUNB0151800	IFSC Code	: SBIN0007085

Link for online donation : https://www.vatsalyagram.org/donate

Paytm Mobile Number of Donation : 88268 88001

तुलसी का चन्द्रमा

-रमेश रंजन त्रिपाठी

हमारे धर्म और संस्कृति में चन्द्रमा का बड़ा स्थान है। पिछले दिनों भारत के चंद्रयान ने कवियों, शायरों के चहेते चाँद को चर्चा में ला दिया है। तुलसी बाबा ने 'श्रीराम चरितमानस' में चंद्रमा को माध्यम बनाकर अनेक भावों का चित्रण बहुत सुंदर तरीके से किया है।

मुनि विश्वामित्र के साथ श्रीराम और लक्ष्मण जनकपुर में महाराज जनक के अतिथि हैं। प्रातःकाल दोनों भाई गुरुदेव के लिए सुमन चुनने पुष्पवाटिका जाते हैं। सीताजी भी गौरी पूजन हेतु वहाँ पहुँच जाती हैं। जनकदुलारी को देखकर श्रीराम के हृदय में 'प्रीत-पुरातन' जाग जाती है। रात में सीताजी के मुख के समान चाँद को देखकर वे विचार करते हैं कि यह शशि सीताजी के मुख के समान नहीं है। खारे सागर में इसका जन्म हुआ, विष इसका भाई है, दिन में शोभाहीन हो जाता है, काले दाग से कलंकित है, भला यह बेचारा गरीब चन्द्रमा सिया के मुख की बराबरी कैसे कर सकता है? यह चाँद घटता-बढ़ता है, विरहिणी स्त्रियों को दुःख देने वाला है, राहु अपनी संधि में पाकर इसे ग्रस लेता है। राघव सोचते हैं कि हे चन्द्रमा! तुझमें अनेक अवगुण हैं जो वैदेही में नहीं हैं। अतः सीताजी के मुख की बराबरी तेरे साथ करने में बहुत अनुचित काम करने का दोष लगेगा।

दूसरा प्रसंग है भरत और भरद्वाज मुनि के मिलन का। वनवास में चित्रकूट निवास कर रहे श्रीराम को वापस अयोध्या लाने भरत जा रहे हैं। वे प्रयाग में भरद्वाज जी को अपने मन की व्यथा सुनाते हैं कि उनके कारण श्रीराम को वन में निवास करना पड़ रहा है। तब ऋषि उनका दोष न होने की बात कहते हुए भरत को सांत्वना देते हैं कि 'हे तात! तुम्हारा यश निर्मल नवीन चन्द्रमा है और श्रीराम के दास कुमुद और चकोर हैं। चन्द्रमा तो हर दिन अस्त होता और घटता है, जिससे कुमुद और चकोर को दुःख होता है, परंतु तुम्हारा यशरूपी शशि कभी अस्त नहीं होगा। संसाररूपी आकाश में यह घटेगा नहीं, वरन् दिन दूना बढ़ेगा। तीनों लोकरूपी चकवा तुम्हारे यशरूपी चन्द्रमा से बहुत प्रेम करेगा और भगवान राम का प्रतापरूपी सूर्य इसकी छवि का हरण नहीं करेगा। यह राकापति रात-दिन सदा-सर्वदा सभी को सुख देने वाला होगा। कैकेयी का कुकर्मरूपी राहु इसे ग्रस नहीं सकेगा। यह चन्द्रमा श्रीराम के सुंदर प्रेमरूपी अमृत से परिपूर्ण है, यह गुरु के अपमानरूपी कलंक से दूषित नहीं है। तुमने इस यशरूपी चन्द्रमा की उत्पत्ति कर धरती पर अमृत सुलभ कर दिया। अब श्रीराम के भक्त इस सुधा से तृप्त हो लें।' ऋषि भरद्वाज की वाणी से श्रीराम के प्रति भरत जी की भक्ति का अत्यन्त मार्मिक चित्रण हुआ है।

एक अन्य अवसर है जब श्रीराम अपनी वानरसेना सहित समुद्र पार कर लंका पहुँच गए हैं। वहाँ रात के समय राघव अपने साथियों से घिरे विराजमान हैं। युद्ध की पूरी तैयारी है। वातावरण वीर रस से ओतप्रोत है। तब चन्द्रमा को पराक्रम का प्रतीक बनाकर तुलसी बाबा श्रीराम के मुख से कहलाते हैं कि 'चन्द्रमा को तो निहारो, कैसा सिंह के समान निडर है! पूर्व दिशारूपी गुफा में निवास करने वाला, प्रताप, तेज और बल की राशि यह चन्द्रमारूपी सिंह अंधकाररूपी मतवाले हाथी के मस्तक को विदीर्ण करके गगनरूपी जंगल में निडर विचरण कर रहा है।'

इसी प्रकरण में आगे गोस्वामी तुलसीदास जी चन्द्रमा को लेकर रोचक वार्तालाप लिखते हैं। श्रीराम ने अपने साथियों से पूछा कि 'चन्द्रमा में जो कालापन है, वह क्या है?' सुग्रीव बोले कि 'चन्द्रमा में धरती की छाया दिखाई दे रही है।' सुग्रीव किष्किन्धा के राजा यानी पृथ्वीपति थे इसलिए उन्होंने भूमि की बात कही। युद्ध सन्निकट था इसलिए मारकाट के विचार भी हावी थे। किसी ने कहा कि 'शशि को राहु ने मारा था, उसी चोट का काला निशान दिखाई दे रहा है।' कोई बोला कि 'ब्रह्मा ने कामदेव की पत्नी रति के मुख को बनाने के लिए चाँद के सार भाग को निकाल लिया जिससे वहाँ छेद हो गया। उसी छिद्र से आकाश की काली छाया दिखाई देती है।'

तब श्रीराम कहते हैं कि 'चन्द्रमा ने अपने प्रिय भाई विष को हृदय में स्थान दे रखा है। अर्थात् उसी जहर का कालापन झलक रहा है।' सीताजी के विरह में डूबे राघव आगे कहते हैं कि 'चन्द्रमा अपनी विषयुक्त किरणों को फैलाकर विरही नर-नारियों को जलाता रहता है।' वातावरण को भक्तिमय बनाने के लिए 'रघुपति प्रिय भक्त' हनुमान जी कहते हैं कि 'हे नाथ! शशि आपका प्रिय दास है, आपकी साँवली मूरत को उसने हृदय में बसा रखा है। उसी श्यामता की छाया वहाँ दिखाई दे रही है।' बजरंगबली की सुंदर बात सुनकर श्रीराम मुस्करा दिए।

यह हमारे प्यारे चन्द्रमा की उदारता ही है कि वह सभी को अपने मन की भावनाओं को उसके माध्यम से अभिव्यक्त करने का भरपूर अवसर देता है। इसीलिए चन्द्रमा को मन का प्रतीक माना जाता है।

एप डेव्हलपर बनें

आज के समय में आपको हर जगह स्मार्ट फोन के यूजर मिल जाएँगे और स्मार्ट फोन में भी आपको सबसे ज्यादा एंड्रॉयड के यूजर मिलेंगे। एंड्रॉयड स्मार्ट फोन में यूजर के लिए सबसे महत्वपूर्ण एप्लीकेशन होती हैं। बिना एप्लीकेशन के स्मार्ट फोन एक नॉर्मल मोबाइल की तरह हैं। इसके माध्यम से यूजर कोई भी जानकारी बड़ी आसानी से प्राप्त कर लेता है। इसलिए एप्लीकेशन डेव्हलपिंग का कारोबार बढ़ता जा रहा है। अगर आपकी रुचि कोडिंग में हैं और आप एक अच्छे करियर विकल्प की तलाश कर रहे हैं तो आप ऐप डेवलपर बनकर अपना करियर बना सकते हैं।

पहले जानें कि 'एंड्रॉयड' क्या हैं

जिस प्रकार से कम्प्यूटर, लैपटॉप में विडोंज एक ऑपरेटिंग सिस्टम होता है, वैसे ही स्मार्ट फोन का ऑपरेटिंग सिस्टम होता - एंड्रॉयड। बदलते युग के साथ ही एंड्रॉयड ऑपरेटिंग सिस्टम में निरन्तर बदलाव हो रहे हैं। अब इसका उपयोग स्मार्ट वॉच, ऑटोमोबाइल, स्मार्ट टी.वी., स्मार्ट ग्लास इत्यादि में भी होने लगा है। आजकल की कम्पनियाँ तो विद्यार्थियों को ध्यान में रखते हुए शिक्षा सम्बन्धी ऐप का निर्माण भी करा रही हैं, जो काफी पसंद भी किये जा रहे है। इसीलिए मार्केट में एंड्रॉयड ऐप डेवलपर की मांग भी बढ़ती जा रही है।

दुनिया में सबसे ज्यादा प्रसिद्ध एप्लीकेशन

फेसबुक
व्हाट्स एप
इन्स्टाग्राम
लिंक्ड इन
अमेजन
ट्विटर
पबजी
टिकटॉक
ओला
जोमेटो

ऐप डेव्हलपर बनने के लिए योग्यता

एक सफल ऐप डेवलपर बनने के लिए आपका फिजिक्स, मेथ्स और कम्प्यूटर विषयों के साथ कक्षा बारहवीं पास होना अनिवार्य है। इसके साथ ही पहले आपको कम्प्यूटर की बेसिक जानकारी होना अनिवार्य है, क्योंकि सभी एप्लीकेशन्स कम्प्यूटर में ही बनाई जाती हैं।

ऐप डेवलपर बनने के लिए आप 'बी टेक इन कम्प्यूटर साइंस' या 'बैचलर ऑफ कम्प्यूटर एप्लीकेशन्स' डिग्री कोर्स कर सकते हैं, जिसमें आपको प्रोग्रामिंग लैंग्वेज सिखाई जाती है। आजकल ऐसे बहुत से डिप्लोमा कोर्स चल रहे हैं, जिनके माध्यम से भी आप कोडिंग लैंग्वेज आसानी से सीखा सकते हैं याद रहे कि आपको कोडिंग लैंग्वेज के हर पहलू को सीखना होगा।

ऐप डेवलपर के लिए जॉब के अवसर

टेलीकॉम कम्पनियाँ
ई-कॉमर्स कम्पनियाँ
वित्तीय संस्थान
शिक्षा और स्वास्थ्य क्षेत्र
आईटी कम्पनियाँ

ऐप डेव्हलपिंग से आय

ऐप डेव्हलपर बनने के बाद आपकी कोई आय सीमा नहीं है। इसमें आप अपनी योग्यता के अनुसार लाखों रुपए महीने भी कमा सकते हैं। इससे संबंधित किसी कोर्स को अच्छे से करने के बाद आप किसी ऐप मेकिंग कंपनी में जॉब के लिए जाते हो तो शुरुआत में आपको 25 से 30 हजार रुपये प्रतिमाह तक का वेतन मिलता है, जो आपके लिए एक अच्छी शुरुआत होती है। इसके कुछ समय बाद जब आपको ऐप डेव्हलपमेंट का अच्छा अनुभव हो जाता है, जब एप कम्पनियाँ आपको लाखों रुपयों का पैकेज देकर जॉब पर ले सकती हैं। बड़ी-बड़ी देशी विदेशी कम्पनियों को ऐसी युवाओं की आवश्यकता होती है, जिनकी महारत 'एप डेव्हलपिंग' में हो। आप स्वयं की एप्लीकेशन बनाकर भी उन्हें 'गूगल प्ले स्टोर' पर अपलोड कर सकते हैं। यदि आपकी बनाई हुई 'ऐप' यूजर को पसंद आने लगती हैं तो फिर आप उनसे कितनी कमाई कर सकते हैं, इसकी कोई सीमा नहीं होती।

'ऐप डेव्हलपर' बनना कोई आसान काम नहीं है लेकिन इतना मुश्किल भी नहीं। यदि आप इस काम को एक खेल समझकर करें, तभी आप एक अच्छे ऐप डेव्हलपर बन सकते हैं। किसी भी काम से जल्दी बोर हो जाने वालों के लिए इस क्षेत्र में कदम रखना एक बड़ी भूल है क्योंकि किसी भी ऐप को बनने में मस्तिष्क के अंदर नई नई तकनीक के बारे में आइडिया सोचने पड़ते है। अगर आपको नई नई क्रिएटिविटी करना पसंद है, तो यह क्षेत्र आपके भविष्य के लिए बेहतर साबित हो सकता है।

(ultimateguider.in से साभार)

श्री अहोबिलम

(कुरनूल, आंध्रप्रदेश)

कुरनूल (आंध्रप्रदेश) से 137 किलोमीटर की दूरी पर अहोबिलम एक पवित्र तीर्थस्थल है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार इसी स्थान पर भगवान विष्णु ने नरसिंह रूप में हिरण्यकशिपु का वध करते हुए अपने भक्त प्रहलाद की जीवन रक्षा की थी। सर्वप्रथम इस स्थान पर मंदिरों का निर्माण आठवीं शताब्दी में चालुक्य शासकों द्वारा किया गया परन्तु यहाँ मौजूद अधिकांश संरचनाओं का पुनर्निर्माण पन्द्रहवीं शताब्दी के आसपास विजयनगर के राजाओं द्वारा किया गया था। घने नल्लामाला वन के बीच स्थित इस स्थान को 'नव नरसिम्हा क्षेत्र' भी कहा जाता है क्योंकि यहाँ भगवान नरसिम्हा की नौ अलग-अलग रूपों में पूजा की जाती है और मुख्य मंदिर से पाँच किलोमीटर के क्षेत्र में इन सभी रूपों के लिए अलग-अलग मंदिर निर्मित किये गए हैं। ज्वाला नरसिम्हा, अहोबिला नरसिम्हा, मालोला नरसिम्हा, क्रोधा नरसिम्हा, करंजा नरसिम्हा, भार्गव नरसिम्हा, योगानंद नरसिम्हा, छत्रवत नरसिम्हा और पावना नरसिम्हा अहोबिलम में भगवान नरसिम्हा के नौ रूप हैं। इनमें से कुछ मंदिरों तक तो आसान पहुँच है परन्तु उनमें से अधिकांश तक घने जंगल और पथरीले रास्तों से होकर ही पहुँचा जा सकता है।

लघुकथा

मुहूर्त शोधन

– रमेश रंजन त्रिपाठी

'यजमान हम यह क्या सुन रहे हैं?' पंडितजी सुमेर के घर में पूजा कराने के बाद बोले –'आप अपने हृदय की शल्यक्रिया करवा रहे हैं। इतने बड़े ऑपरेशन के लिए आपने मुहूर्त का शोधन क्यों नहीं करवाया?'

'जी, मुहूर्त तो निकलवाया है परंतु नए तरीके से – सुमेर बोला।

'कोई नया विद्वान ढूँढ लिया है क्या?' पंडितजी अचकचाए।

'नहीं ! आप गलत समझ रहे हैं।' सुमेर ने बात को स्पष्ट किया –'मुहूर्त अर्थात् किसी कार्य हेतु निश्चित किया गया विशिष्ट समय। ऑपरेशन का समय हमने भलीभाँति सोच विचार कर तय किया है।'

'कैसे?' पंडितजी कुछ समझे नहीं।

'जब पता चल गया कि ऑपरेशन अपरिहार्य है, तब हमने इसे जितनी जल्दी संभव हो सके, करवा लेने का निश्चय कर लिया।' सुमेर बताने लगा –'हमने सही सर्जन की खोज शुरू की। सभी ऐंगल से सोच विचारकर शॉर्ट लिस्ट किए गए तीन में से एक नाम को फाइनल कर दिया। ये सर्जन दो अस्पतालों में सर्जरी करते हैं। हमने अपनी हैसियत और जरूरत के मुताबिक सर्जन की राय का सम्मान करते हुए अस्पताल भी चुन लिया। अब मरीज की शारीरिक और मानसिक अवस्था का अध्ययन किया जाएगा। ब्लड प्रेशर, मधुमेह, क्रिएटिनिन, फेफड़ों की हालत, शरीर में मिनरल और विटामिन जैसे तत्वों की परीक्षा की जाएगी।

इस मेजर सर्जरी को बर्दाश्त करने की मरीज की क्षमता का सभी ऐंगल से परीक्षण कर सर्जन की उपलब्धता को ध्यान में रखते हुए शल्यक्रिया की तारीख और समय तय कर दिया जाएगा। किसी सर्जरी के लिए इससे बेहतर मुहूर्त शोधन और कैसे हो सकता है?'

सुमेर ने अपनी बात को यूँ पूरा किया– 'जब तकनीकी रूप से इतना कुछ संभव नहीं था तब लोग अन्य विकल्पों का सहारा लिया करते थे। पारम्परिक मुहूर्त निकालने की प्रक्रिया भी उनमें से एक है। क्या आपको अभी भी लगता है कि हमने मुहूर्त नहीं निकलवाया?'

'आप बिलकुल उचित तरीके से काम कर रहे हैं।' पंडितजी ने आशीर्वाद दिया –'भगवान आपको शीघ्र ही निरोग करें।'

वात्सल्य मंगल मिलन सम्पन्न हुआ

वृन्दावन.

विगत 26 एवं 27 अगस्त को वात्सल्य ग्राम वृन्दावन में 'वात्सल्य मंगल मिलन' समारोह आयोजित किया गया। 'परमशक्ति पीठ' एवं देश के विभिन्न राज्यों में सक्रिय 'वात्सल्य सेवा समितियों' के पदाधिकारीगणों ने इस आयोजन के सहभागी बनकर संस्था के सेवाकार्यों की योजनाओं एवं योगदान पर गहन विचार-विमर्श किया। पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी के पावन सानिध्य में श्री सी. बी.पाटोदिया, श्री रमेश कुमार गुप्ता, श्री आर.पी.खेतान, साध्वी साक्षी चेतना जी, श्री गिरधारीलाल गर्ग, श्री आर.सी. अग्रवाल, श्री रामजीभाई पटेल, श्री राकेश गुप्ता, श्री शिव कुमार गोयल, श्री अनिल सिंघल, श्री हेमन्त द्विवेदी, श्री भारत भाई, श्री जयनारायण अग्रवाल, श्री प्रमोद जी, श्री जयभगवान अग्रवाल एवं श्री प्रहलादराय गर्ग ने अपनी प्रतिष्ठापूर्ण उपस्थिति से मंच को सुशोभित किया। बैठक में मुख्य रूप से वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन में निर्माणाधीन 'श्री सर्वमंगला पीठम्' के शीघ्र ही सम्पूर्ण होने की विस्तृत चर्चा हुई। पूज्या दीदी माँ जी ने अपना पावन पाथेय सभी गणमान्यजनों को प्रदान किया।

'वात्सल्य मंगल मिलन' समारोह को संबोधित करते हुए पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी

भारत की सांस्कृतिक विरासत का अद्भुत दर्शन होगा श्री सर्वमंगला पीठम्

– दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा

श्री सर्वमंगला पीठम के माध्यम से चार युगों की नारी शक्ति की भूमिका की चर्चा करने का क्या महत्व है उसे मैं आपको बताना चाहती हूँ। हमारी सनातन संस्कृति में नारी को परिवार की धुरी माना गया है। वो सदा से ही अपने पति के सम्मान में अपना सम्मान अनुभव करती आई है। परन्तु आज भारत की अनेक स्त्रियों की सोच में एक बड़ा परिवर्तन आया है, जिसके कारण वो अपने पति के अस्तित्व में स्वयं का अस्तित्व मानने को तैयार नहीं। अब वो अपने पति के लिए समर्पित होने को राजी नहीं है। क्यों? क्योंकि अब वोआर्थिक दृष्टि से स्वावलम्बी हैं। दो शिखरों का कभी मिलन नहीं होता। हमारे ऋषियों ने हमें परम्पराएँ इसलिए सौंपी थीं कि हम उनका रक्षण करेंगे परन्तु हमने क्या किया? हमने उन्हीं परम्पराओं की धज्जियाँ उड़ाकर अपना लोक भी बिगाड़ा और परलोक भी।

यहाँ इस बात का यह अर्थ बिलकुल न निकाला जाए कि मैं बेटियों की आधुनिक शिक्षा के विरुद्ध हूँ अथवा उन्हें आगे बढ़ते हुए स्वावलम्बी नहीं बनने देना चाहती। हमारे वात्सल्य ग्राम की बेटियाँ भी पढ़ लिखकर मेडिकल, इंजीनियरिंग और मैनेजमेंट के क्षेत्र में अपनी महत्वपूर्ण सेवाएं दे रही हैं। मुझे चिंता है समाज की कुछ उन बेटियों की, जो पढ़ाई लिखाई के नाम पर दूसरे शहरों में जाकर अपने जीवन को सिगरेट के धुएँ उड़ा रही हैं। कई बार वो दुकानों पर शराब खरीदते हुए भी देखी गई हैं। मुझे बड़ी चिंता तब होती है जब हिंदुओं की बेटियाँ गन्दी गालियाँ बकते हुए 'रील' बनाकर सोशल मीडिया पर पोस्ट करती हैं। हमारा सनातन 'धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष' की बात करता है परन्तु हमारी संतानों के पास उसे समझने के लिए समय नहीं है।

इसके विपरीत तब मुझे बड़ा गर्व होता है, 'भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो)' में अपनी वैज्ञानिक महिलाओं को देखकर। वो साड़ी पहने, माथे पर बिंदी लगाए, मांग में सिंदूर भरे और मंगलसूत्र पहने हुए हमारे उपग्रहों, मंगलयान और चंद्रयान को अंतरिक्ष में भेजने के लिए दिन-रात काम करती हैं। अपनी संस्कृति को धारण किए हुए उनमें चाँद को छूने की सामर्थ्य है। इसका मतलब है कि आप भारतीय भाव के साथ भी संसार की आँखों में आँखें डालकर बात कर सकती हो।

आप देखिये कि कितना अद्भुत दृश्य है पौराणिक भारत की स्त्री का! त्रिदेव धरती पर आकर अनुसूईया से कहते हैं कि 'हमें तेरा दूध पीना है। तू तो माँ है ना? तो फिर हमें अपने आँचल का दूध पिला।' अनुसूईया ने मुस्कुराकर कहा 'अच्छा! मेरे वात्सल्य का रसपान करना चाहते हो? तो सुनो, तुम्हें इसके लिए शिशु बनना पड़ेगा।' सती अनुसूईया ने अपने तप बल से ब्रह्मा, विष्णु और महेश को नन्हे शिशुओं के रूप में परिवर्तित कर अपना स्तनपान कराया। त्रिदेवों को भी नन्हा शिशु बना देने की सामर्थ्य भारतीय स्त्री के सतीत्व में रही। हम कैसे भूल जाएँ इस महिमा को?

स्मरण रखना कि प्रतिष्ठा नग्न होकर नहीं मिलती। किसी की कार्बन कॉपी बनकर प्रतिष्ठा नहीं प्राप्त की जा सकती। अपनी भाषा को निम्न स्तर तक पहुँचा कर प्रतिष्ठा नहीं पाई जा सकती। दूसरी बात मैं कहना चाहती हूँ कि इस समय पूरी दुनिया में एक फ्रॉड चल रहा है। सामाजिक भेदभाव का दोष सनातनियों पर लगाया जा रहा है। जबकि इसी दुनिया में एक ऐसी मजहबी व्यवस्था भी है जो स्त्री को 'पुरुष की पसली' से बना हुआ मानती है। वो ये नहीं मानते की स्त्री में भी आत्मा है। पुरुष की पसली से बनाई गई स्त्री केवल भोगने के लिए है। इसके विपरीत भारत ने कहा 'अर्धनारीश्वर।' सनातनी व्यवस्था 'धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष' की बात कहती है। धन तो अनेक देशों ने कमाया है लेकिन धर्म के नहीं होने से वहाँ क्या स्थिति हुई?

वर्ण व्यवस्था को लेकर हम पर यह आरोप लगाया जाता है कि हम सामाजिक भेदभाव करते हैं। मेरा कहना है कि हमारी व्यवस्था में एक क्षत्रिय ब्राह्मण बन सकता है। ब्राह्मण शूद्र बन सकता है। शूद्र ब्राह्मण बन सकता है। क्यों? क्योंकि केवल जन्मना हमारे यहाँ श्रेष्ठ नहीं माना गया। जन्म लेने के बाद तो हम पशुवत होते हैं किन्तु संस्कार धारण करने के बाद मनुष्य बनते हैं, द्विज बनते हैं।

वासल्य ग्राम, वृन्दावन में निर्माणाधीन श्री सर्वमंगला पीठम् भारत की इसी महान संस्कृति का दर्शन होगा, जिसने 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के भाव को चरितार्थ किया। यहाँ चारों युगों में भारतीय स्त्री की सकारात्मक भूमिका और भारत की सांस्कृतिक विरासत का अद्भुत दर्शन होगा।

शारीरिक एवं मानसिक रुप से दिव्यांग बच्चों हेतु निःशुल्क होम्योपैथिक चिकित्सा शिविर का आयोजन हुआ

विगत 27 अगस्त को वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन में मानसिक एवं शारीरिक अक्षमताओं से पीड़ित बच्चों के लिए श्री गोपालकृष्ण अरोड़ा सांस्कृतिक मंच 'आशा की किरण' के सौजन्य से निःशुल्क होम्योपैथिक चिकित्सा शिविर आयोजित किया गया। पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी की पावन प्रेरणा से आयोजित इस शिविर की संयोजिका सुश्री मीनाक्षी अग्रवाल ने बताया कि वरिष्ठ होम्योपैथ डॉ. बी.एस. जोहरी के नेतृत्व में दिल्ली के पन्द्रह डॉक्टर्स, दो मेडिकल असिस्टेंट्स एवं एक फार्मासिस्ट के साथ इस एक दिवसीय चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। इसमें आए हुए दिव्यांग बच्चों के बारे में उनके पालकों से उनके रोग संबंधी सारी जानकारियाँ प्राप्त करने के बाद डॉक्टर्स द्वारा अगले तीन महीनों की दवाईयाँ निःशुल्क रूप से प्रदान की गईं। तीन महीनों बाद पीड़ित बच्चों पर उनका प्रभाव जानने के लिए पुनः इस निःशुल्क होम्योपैथिक शिविर का आयोजन किया जाएगा। यहाँ उल्लेखनीय है कि पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी की पावन प्रेरणा से वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन में 'वैशिष्ट्यम्' नामक एक प्रशिक्षण केन्द्र संचालित है, जिसमें अत्याधुनिक तकनीक एवं कुशल प्रशिक्षकों के द्वारा मानसिक एवं शारीरिक रूप से बाधित बच्चों को सामान्य जीवन की ओर लौटाने के अनेक प्रयत्न किये जा रहे हैं।

इस शिविर में दिल्ली के सुप्रसिद्ध होम्योपैथ डॉ.बी. एस.जौहरी, डॉ.विपिन जेठानी, डॉ. अंजू जेठानी, डॉ.सर्वेश गोयल, डॉ.नेहा जौहरी, डॉ.चारु गुप्ता, डॉ.गुरप्रीत कौर, डॉ. प्रतिभा यादव, डॉ.शिवानी चौधरी, डॉ.सिमरन खन्ना, डॉ. अर्चना, डॉ.शैली, डॉ. निशा, डॉ.शिवांक, डॉ.अग्रिमा, डॉ. सोनू एवं वैशिष्ट्यम् परिवार ने अपनी समर्पित सेवाएँ प्रदान कीं।

निःशुल्क होम्योपैथी चिकित्सा शिविर के विभिन्न दृश्य

शारीरिक एवं मानसिक अक्षमताओं से पीड़ित बच्चों के लिए वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन में आयोजित
निःशुल्क होम्योपैथी चिकित्सा शिविर में सेवाएँ देने वाले डॉक्टर्स से चर्चा करते हुए पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी

चिकित्सा शिविर में सेवाएँ देने वाले डॉक्टर्स के साथ पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी

शिक्षक दिवस

समविद गुरुकुलम् सीनियर सेकेण्डरी स्कूल,
वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन में आयोजित 'शिक्षक दिवस' की झलकियाँ

समविद गुरुकुलम् सीनियर सेकेण्डरी स्कूल शिक्षक परिवार

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी

नन्द घर आनन्द भयो

गोकुलम्, वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन में
श्रीकृष्ण जन्मोत्सव की धूम

समविद गुरुकुलम् सीनियर सेकेण्डरी स्कूल,
वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन में जन्माष्टमी का आनन्द

पूज्या दीदी माँ जी के आगामी कार्यक्रम

14–15 अक्टूबर 2023

निःशुल्क मोतियाबिन्द ऑपरेशन शिविर

स्थान : प्रेमवती गुप्ता नेत्र चिकित्सालय,
वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन (उ.प्र.)

26 अक्टूबर 2023

वात्सल्य सेवा सदन का लोकार्पण

स्थान : रोहिणी, दिल्ली

29 अक्टूबर से 4 नवम्बर 2023

श्रीमद् भागवत कथा एवं ब्रज चौरासी परिक्रमा

स्थान : मीरा माधव निलयम्,
वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन (उ.प्र.)
(सम्पर्क नंबर : 93990 79114)

श्रद्धांजलि

मेरे गुरुभाई, लम्बे समय से हिन्दुत्व स्वाभिमान के संघर्ष में और उसके बाद वात्सल्य यात्रा के मेरे निरन्तर सहयोगी तथा परमशक्ति पीठ, ओंकारेश्वर के मंत्री श्री आनन्द कानड़कर की माताजी श्रीमती उषा रमेश कानड़कर (इन्दौर, मध्यप्रदेश) का देहावसान विगत 21 सितम्बर को हो गया। आपका जीवन धर्मकार्यों एवं अपने परिवार को एकजुटता का संस्कार देते हुए सम्पूर्ण हुआ। आनन्द जैसे राष्ट्रवादी एवं निष्ठावान कार्यकर्ता ऐसी ही माँ की गोद में आकार लेते हैं।

उनका देहावसान एक सामाजिक क्षति है। मैं परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करती हूँ कि वे दिवंगत आत्मा को अपनी शरणागति प्रदान कर, शोक संतप्त कानड़कर परिवार को धैर्य प्रदान करें।

–दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा

टेलीविज़न पर

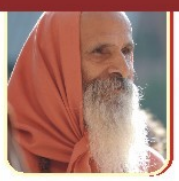

परम पूज्य सद्गुरुदेव युगपुरुष
स्वामी परमानन्द गिरि जी महाराज की
परम वाणी

दिशा TV — प्रतिदिन रात्रि 9:30 बजे

Vedic — प्रातः 9:30 बजे सोमवार, बुधवार एवं गुरुवार

परम पूज्या
दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी की
वात्सल्य वाणी

संस्कार — प्रतिदिन सायं 7:20 बजे

आस्था — प्रतिदिन प्रातः 8:00 बजे

सत्संग — प्रतिदिन रात्रि 10:30 बजे

ओमप्रकाश गोयनका
9810011579, 8285011579

Rasila
Mango Extravaganza
Alphonso Mango Jalebi
Alphonso Mango Burfi
Alphonso Mango Sandwich

Rasila Mango Bar EXPORT QUALITY
LNG MANGO BAR
दुर्गा लाजवाब आम पापड़
TRIPPLE ONE
Dilbahar's

DURGA TRADERS

IMPORTERS & EXPORTERS
SPECIALIST IN : AAMPAPAR & DIGESTIVE CHURAN GOLI

188, Tilak Bazar, Delhi-110006
Tel.: 011 41509286, 08920041961, 09312872320, 09810017579
E-mail : durgatraders188@hotmail.com

Postal Regd. No. DL(E)20/5231/2022-24
DELMUL/2006/16716
Postal Date : 9th & 10th of Every month

An ISO 9001: 2000 Certified School

SAMVID GURUKULAM SR.SEC. SCHOOL

CBSE affiliated (# 2131180)
Co-Education up to Class Vth; Residential and Day School for Girls
Play Group - Grade XII (Science, Commerce, Humanities)

TECHNOLOGY ENABLED SCHOOL
Powered By : Extramarks

Approved as Girls Sainik School by 'Sainik School Society' under the Ministry of Defense

We bring out the 'winner in your child'

- State of the art infrastructure
- Low teacher student ratio
- Total Personality Development
- Wi-Fi Campus
- Counseling Cell
- Center of performing arts
- Safe guarding Indian culture as part of world heritage
- Science, Computer & Mathematics Lab
- Regular Excursions
- Centrally Air cooled Hostel for girls.
- SANSKARAM CLASSES: Learning life skills through Value Education
- NANHI DUNIYA: Introduction of children to nature
- SPORTS ACADEMY: Horse Riding, Skating Football, Hockey, Basket Ball, Lawn Tennis, Table Tennis, Judo-Karate, 400M Track
- MUSIC: Vocal & Instrumental
- DANCE: Bharatnatyam, Kathak, Contemporary
- Transport facility available

Vatsalya Gram, Mathura - Vrindavan Marg, P.O. - Prem Nagar,
Vrindavan - 281003 (U.P.) Mobile No. 94127 77152 & 94127 77154
Website : www.samvidgurukulam.org
Like us at : www.facebook.com / samvid4u
email : principal@samvidgurukulam.org